नवम्बर-2013 ◆ वर्ष 2 ◆ अंक 6 ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

नवम्बर-२०१३

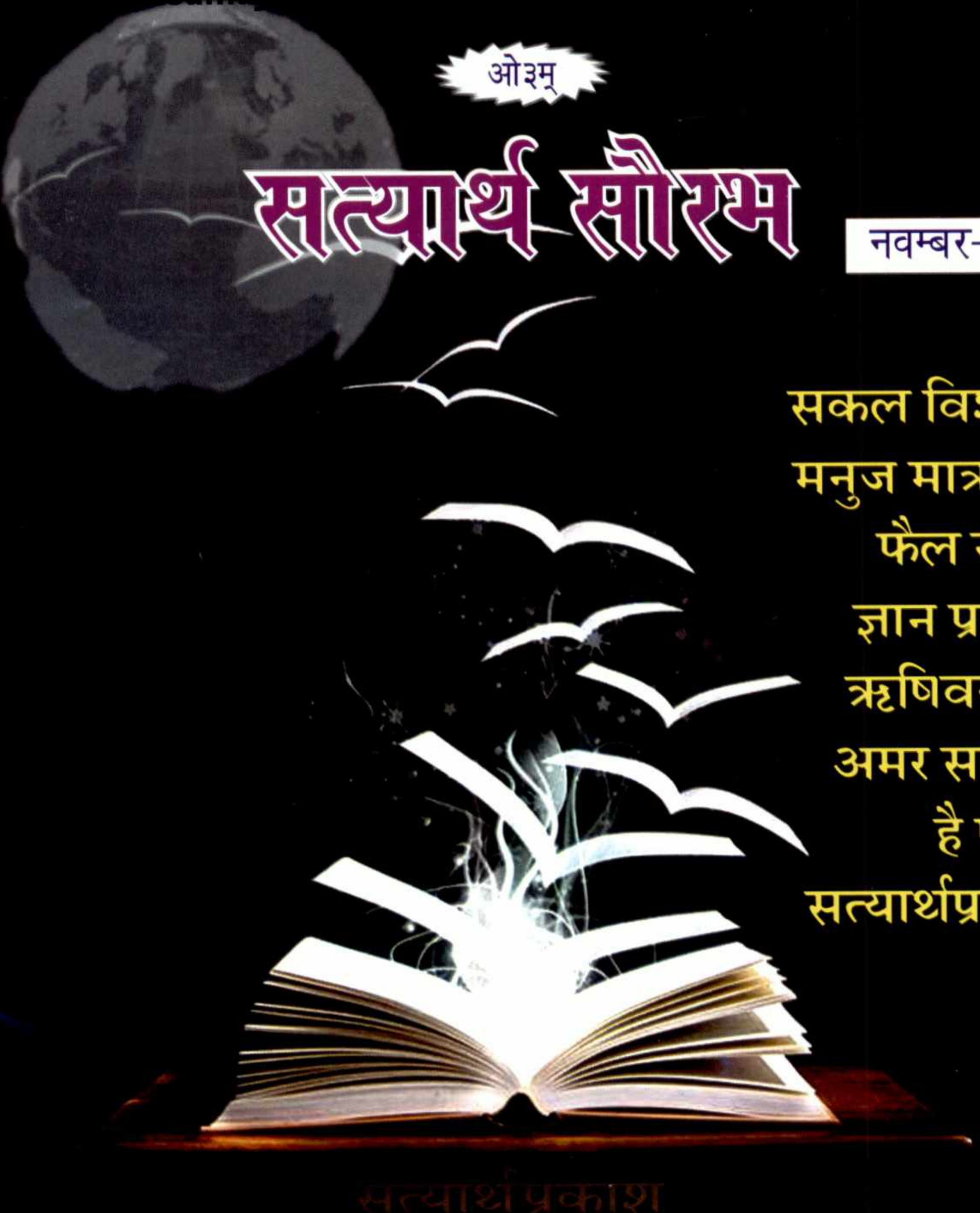

सकल विश्व में
मनुज मात्र तक
फैल रहा है
ज्ञान प्रकाश
ऋषिवर तेरी
अमर साधना
है प्यारा
सत्यार्थप्रकाश

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० २३

www.thearyasamaj.org

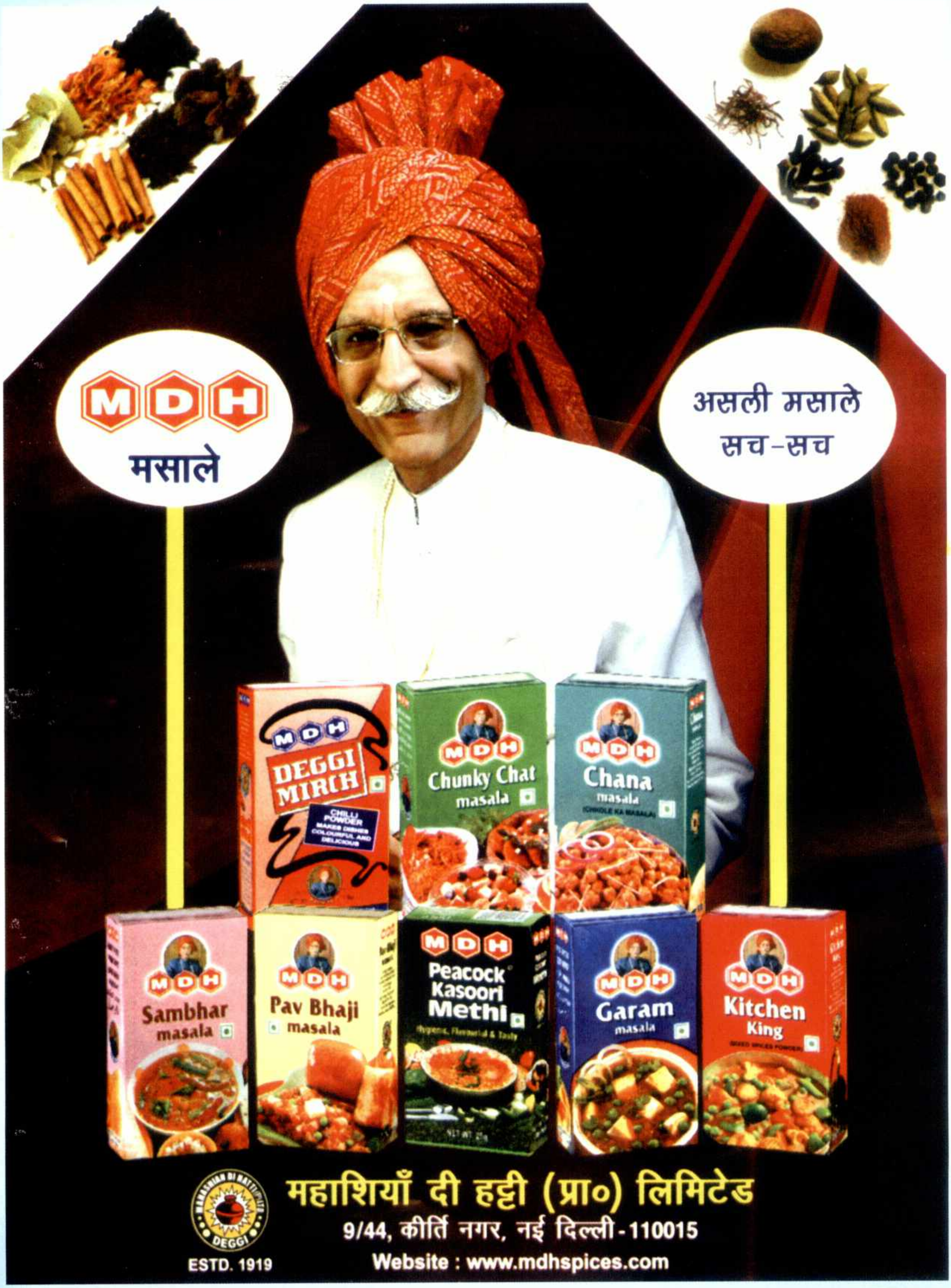

www.thearyasamaj.org

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ
महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल
डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक
अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक
भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग
नवनीत आर्य

व्यवस्थापक
सुरेश प्राटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८ IFSC CODE- UBIN 0531014 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११४
कार्तिक शुक्ल पंचमी
विक्रम संवत्
२०७०
दयानन्दाब्द
१८९

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

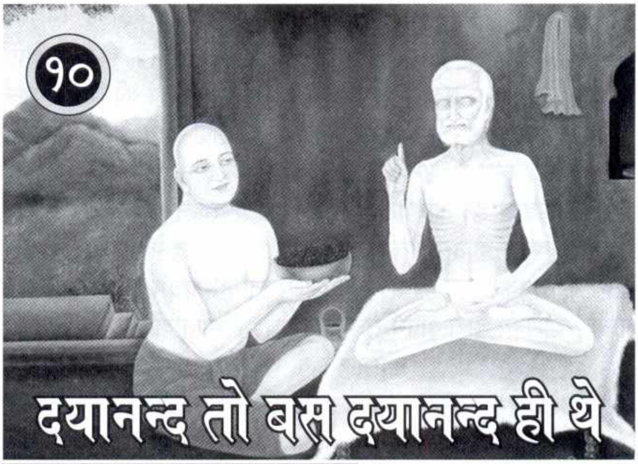

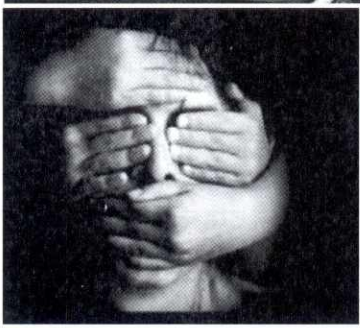

खो रहा २७ है बचपन

November - 2013

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)
कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन ३५०० रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

समाचार २२

हलचल २३

०४	वेद सुधा
०७	न्यायालय को नमन
०६	वैज्ञानिक ऋषि दयानन्द
१४	Vande Mataram
१६	एक मुकद्दमा
१६	इण्डिया को भारत बनाने का प्रयास
२१	वासुदेव बलवन्त फड़के
२४	प्रभु की विचित्र सृष्टि
२६	पत्रलेखन की विधा पर संकट
३०	बाल वाटिका

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - २ अंक - ६

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६६४ , ९३१४५३५३७९, ९८२८६२६७४७
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

www.thearyasamaj.org

ओ३म्

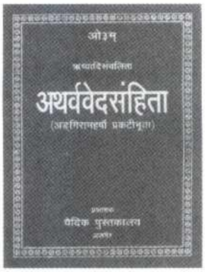

वेद सुधा

देशोत्थान के उपाय

श्रमेण तपसा सृष्टा ब्रह्मणा वित्तर्ते श्रिता ॥ - अथर्व. १२/५/१

गतांक से आगे ...

राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति को तपस्वी होना चाहिए। 'तप' शब्द भी हमारे साहित्य और व्यावहारिक जीवन में अति प्रचलित है। शास्त्रों में भिन्न-भिन्न स्थानों पर तप की भिन्न-भिन्न परिभाषाएँ भी की गई हैं। किन्तु तप का मूलगत भाव है- **'द्वन्द्व-सहिष्णुत्व'- सुख-दुःख, भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी, हानि-लाभ, अनुकूलता-प्रतिकूलता आदि इस प्रकार के जितने भी 'द्वन्द्व' अर्थात् जोड़े बनते हैं, उनमें विचलित न होकर कर्त्तव्य-कर्म करते चले जाना तप है।** इस तप का आध्यात्मिक और लौकिक दोनों प्रकार से महत्त्व है। आध्यात्मिक क्षेत्र में द्वन्द्व-सहन से मन की शुद्धि होती है और व्यावहारिक जगत् में इस तप से कर्मठता की भावना बद्धमूल होकर लोक-कल्याण का प्रसाधन बनती है। अतः शास्त्रवर्णित उन अनेक तप के भावों में से मैं अपने प्रतिपाद्य विषय के अनुकूल तप के दो भावों को चुनता हूँ- प्रथम- महाभारत में युधिष्ठिर के द्वारा दिये गए यक्ष के उत्तर को, और द्वितीय- आचार्य चाणक्य द्वारा अपने सूत्र में वर्णित परिभाषा को।

महाभारत के कथानक में यक्ष और युधिष्ठिर संवाद अति प्रसिद्ध है। यक्ष ने एक लम्बी प्रश्नावलि युधिष्ठिर से पूछी है और युधिष्ठिर ने उसके उत्तर दिये हैं। यक्ष के उन प्रश्नों में एक प्रश्न है- **''तपः किं लक्षणं प्रोक्तम्''**- तप का क्या लक्षण है? युधिष्ठिर ने इसका उत्तर दिया है- **'तपः स्वकर्म-वर्तित्वम्'**- अपने कर्त्तव्य का पालन करना ही तप है। किन्तु इस लक्षण की पूर्ति अथवा पुष्टि तब तक नहीं हो सकती, जब तक कि आचार्य चाणक्य का सूत्र इसके साथ न जुड़े। आचार्य चाणक्य ने लिखा है- **'तपः सार इन्द्रियनिग्रहः'**- तपस्या का सार जितेन्द्रियता है। जो जितेन्द्रिय नहीं है, वह सिर और धड़ की बाजी लगाकर कर्त्तव्य-पथ पर अग्रसर नहीं हो सकता। उसे संसार के भोगों के प्रलोभन कर्त्तव्य-विमुख कर देंगे और इसी प्रकार मार्ग में आया हुआ संकट भी उसे पथभ्रष्ट कर देगा। बात का धनी तो मर्यादा पुरुषोत्तम राम की तरह कोई तपस्वी ही बेखटके उत्तर दे सकता है। राम ने कहा था-

लक्ष्मीचन्द्रादपेयाद्वा हिमवान् वा हिमं त्यजेत्।
अतीयात् सागरो वेलान्न प्रतिज्ञामहं पितुः॥

'चाहे चाँदनी चन्द्रमा से पृथक् हो जाय, चाहे हिमालय हिम का परित्याग कर दे, चाहे समुद्र अपने किनारों को लाँघ जावे, किन्तु मैं अपने पिता की प्रतिज्ञा से विमुख नहीं हो सकता।'

पण्डितराज जगन्नाथ की अन्योक्ति में मूसल की मार की परवाह किये बिना धानों के समान हँसकर कोई जितेन्द्रिय ही उत्तर दे सकता है। मूसलों की चोट खाकर हँसते हुए धानों ने कहा-

अस्मानवेहि कलमानलमाहतानां येषां प्रचण्डमुसलैरवदातवैव।
स्नेहं विमुच्य सहसा खलताम्प्रयान्ति ये स्वल्पपीडनवशान्न वयं तिलास्ते ॥

'हम पर जितने प्रहार होते जावेंगे, हमारी सफ़ेदी उतनी ही निखरती जाएगी। जो थोड़े-से पीड़ने से ही स्नेह (तेल) छोड़कर खल (दुष्ट) बन जावें, वे तिल हम नहीं हैं।' यहाँ स्नेह और खल शब्दों में श्लेष है। स्नेह का अर्थ प्रेम और तेल दोनों होते हैं। तिल थोड़े-से पीड़ने पर तेल छोड़कर खली बन जाते हैं और दुष्टजन (खल) प्रेम छोड़कर दुष्टता (खलता) पर उतारू हो जाते हैं।

जिस राष्ट्र के नागरिक बड़ी-से-बड़ी विपत्ति आने पर कर्त्तव्यविमुख न हों, राष्ट्रीय उन्नति के आधार वे ही माने जाएँगे। विवेकी और विचारशील व्यक्ति की यही पहचान नीति-निपुण विदुर जी ने बताई है-

यस्य कार्यन्न विघ्नन्ति शीतमुष्णं भयं रतिः।
समृद्धिरसमृद्धिर्वा स वै पण्डित उच्यते ॥

'सर्दी-गर्मी, डर और प्रेम तथा सधनता और निर्धनता जिस कर्मयोगी के मार्ग में बाधा उपस्थित नहीं करते, वही पण्डित और विवेकी है।'

टाड के लिखे राजस्थान के इतिहास में आपको दर्जनों ऐसे उदाहरण मिल जायेंगे, जिनमें यह वर्णित है कि अनेक वीर मातृभूमि पर शत्रु का आक्रमण होने पर विवाह की वेदी से उठकर सीधे रणभूमि में जा धमके। ठीक इसी प्रकार की सरदार चूड़ावत और हाड़ी

www.thearyasamaj.org

रानी की घटना तो प्रसिद्ध ही है।

छोटी-सी-रियासत रूपनगर के शासक को बादशाह औरंगजेब का फ़र्मान मिला कि 'अमुक तिथि तक अपनी बेटी को दिल्ली के शाही महल में बेगमों की सेवा के लिए भेज दो, नहीं तो मैं आक्रमण करके रियासत को धूल में मिला दूँगा'। राजा बादशाह के इस हुक्म से घबरा गया और अपनी पुत्री को दिल्ली जाने की प्रेरणा करने लगा। क्षत्रियकुमारी यह सुनकर आगबबूला हो उठी। अपने पिता की भर्त्सना करते हुए उसने कहा कि वहाँ जाने की अपेक्षा उसे मरना स्वीकार है।

Maharana Raj Singh Ji

पिता को यह उत्तर देकर, चंचलकुमारी ने महाराणा राजसिंह को यह लिखा- "आपकी वीरता और धर्मपरायणता को देखकर मैंने हृदय में आपको पति के रूप में वरा है। मेरे स्वाभिमान को कुचलने के लिए बादशाह औरंगजेब ने मेरे पिता को हुक्म दिया है कि मेरा डोला अमुक दिन तक शाही महल में पहुँचा दे, अन्यथा रूपनगर पर आक्रमण करके रियासत को नष्ट-भ्रष्ट कर देगा और मुझे दिल्ली ले जावेगा। मेरे पिता भयभीत हैं, मुझे उनसे यह आशा नहीं कि वे मेरी रक्षा के लिए अपने विनाश की चुनौती स्वीकार करेंगे, अतः मेरी रक्षा का दायित्व अब आपके ऊपर है। आप जैसे भी हो, नियत दिन से पूर्व रूपनगर आकर मेरे साथ विवाह करके मुझे मेवाड़ ले-जाइये, नहीं तो मैं बादशाह के चंगुल से बच न सकूँगी। यदि ऐसा हुआ तो रूपनगर के राजा की बेटी नहीं, महाराणा राजसिंह की पत्नी दिल्ली जाएगी।" यह पत्र अपने विश्वस्त पुरोहित के हाथ महाराणा को भेज दिया।

पुरोहित पत्र लेकर ऐसे समय पहुँचा जब महाराणा का दरबार लगा हुआ था। पुरोहित राणा का अभिवादन करके और पत्र को आगे रखकर एक ओर बैठ गया। महाराणा ने पत्र खोलकर पढ़ा तो चिन्तामग्न होकर चुप बैठ गए। महाराणा के राजपुरोहित ने यह स्थिति देखकर राणा से पूछा- "पत्र में क्या है, जिसने आपको चिन्तित बना दिया है?" राणा ने पत्र को पुरोहित जी को देते हुए कहा कि आप पढ़कर दरबार को सुना दीजिये। पुरोहित जी ने पत्र पढ़कर दरबार को सुनाया और आवेशपूर्ण मुद्रा में राणा की ओर देखते हुए कहा- "इसमें सोचने की कौन-सी बात है? क्या अपनी पत्नी की रक्षा का साहस भी महाराणा में नहीं रहा?" पुरोहित की फटकार सुनकर झेंप मिटाते हुए महाराणा ने उत्तर दिया- "नहीं, रक्षा तो अवश्य की जाएगी, सोचने की बात केवल अल्प समय में कार्य-सम्पादन की है। कैसे इतनी शीघ्रता हो, यही बात विचारणीय है।" यह कहकर महाराणा ने पान का एक बीड़ा और तलवार दरबार के बीच में रखवाकर अपने सामन्तों को सम्बोधित करते हुए कहा-"जिस वीर में यह साहस हो कि वह दिल्ली से रूपनगर पर आक्रमण करनेवाले शाही लश्कर को मार्ग में तब तक रोके रक्खेगा, जबतक कि मैं राजकुमारी से विवाह करके चित्तौड़ न पहुँच जाऊँ, वह इस बीड़े को उठा ले!"

दरबार में सन्नाटा छा गया और सभी वीर एक-दूसरे का मुँह तकने लगे। थोड़ी देर राणा ने इस स्थिति को देखकर वीरशिरोमणि नवयुवक सरदार चूड़ावत की ओर देखा और कहा- "सरदार चूड़ावत! इस कठिन काम को पूरा करने की आशा तुमसे की जा सकती है।" चूड़ावत ने यह सुनते ही उठकर बीड़ा चबा लिया और तलवार को हाथ में लेकर अभिवादन करके और फौज को कूच के लिए तैयारी का आदेश देकर चूड़ावत अपने महल में अपनी नवोढ़ा पत्नी से विदाई लेने गया। महल में पत्नी को देखते ही नवयुवक सरदार को भविष्य की चिन्ता ने घेर लिया। विवाह के बाद अभी सरदार के हाथ का कंगन भी नहीं खुला था। रानी हाड़ी के हाथ में विवाह के अवसर पर लगाई गई हल्दी का पीलापन भी अभी विद्यमान था। सरदार के मन में पत्नी के भावी जीवन की चिन्ता बिजली की तरह कौंध गई। विचार आया कि इस मोर्चे से मेरा वापस आना कठिन है...... फिर यह किशोरी जिसने संसार का कुछ भी नहीं देखा, मेरे पश्चात् कैसे अपना जीवन काटेगी? चिन्ता की अग्नि से सरदार का चेहरा मुर्झा गया।

रानी हाड़ी पति के स्वागत के लिए खड़ी हुई, किन्तु पति की इस अवस्था को देखकर व्याकुलता से पूछने लगी- "आप बाहर से प्रसन्न-वदन आ रहे थे, मुझे देखकर उदास क्यों हो गये?" रानी की बात सुनकर सरदार ने दरबार की सारी घटना और युद्धभूमि के लिए अपने प्रस्थान की बात बताई।

हाड़ी सब सुनकर और प्रसन्न होकर बोली- "वीरों की भूमि मेवाड़ में मैं अपने पति की वीरता की इस धाक को जानकर कृतकृत्य हो गई कि इस कठिन मोर्चे को फतह करने के लिए सबकी आशाओं के केन्द्र मेरे पतिदेव हैं। मगर मैं आपकी उदासी का कारण नहीं समझ पाई?" इसे सुनकर सरदार ने अपनी चिन्ता का कारण बताया। रानी ने सरदार को उत्साहित करते हुए कहा कि- "आप मेरी ओर से निश्चिन्त होकर जाइये। आप अपने कर्त्तव्य को जानते हैं तो आपकी अर्धांगिनी भी अपने कर्त्तव्य से अनभिज्ञ नहीं है। मैं किसी भी प्रकार से आपके नाम पर बट्टा न लगने दूँगी।"

www.thearyasamaj.org

सरदार को रानी ने सान्त्वना देकर प्रसन्नता से विदा किया। सरदार की सेना जब प्रस्थान करने लगी तो मन में रानी हाड़ी का ध्यान पुनः उभरकर क्षुब्ध करने लगा। इसी हड़बड़ी में सरदार ने एक सैनिक को अपने महल में हाड़ी के पास सन्देश देकर भेजा- "मैं जा रहा हूँ मुझे विश्वास है कि दिये हुए वचनों पर तुम अडिग रहोगी।"

इस सन्देश से रानी को ठेस लगी और सोचने लगी कि मेरी चिन्ता के कारण मेरे पति पूरे मनोयोग से अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं कर सकेंगे, अतः मुझे अपनी ओर से निश्चिंत कर देना चाहिए। वह सैनिक को ठहरने के लिए कहकर अन्दर से एक थाल और रूमाल ले आई और सैनिक से कहा- "मैं अपना शीश पति को भेंट कर रही हूँ। तुम इसे थाल में रूमाल से ढककर ले जाना और मेरी ओर से कहना कि आपको अपनी चिन्ता से मुक्त करने के लिए मैं प्रथम अपने कर्त्तव्य का पालन कर रही हूँ, ताकि महाराणा द्वारा सौंपे गए अपने दायित्व को आप भली प्रकार निभा सकें।"

सैनिक इस दृश्य से स्तब्ध रह गया। उसने रानी का शिर थाल में रखकर सरदार को देते हुए हाड़ी रानी के वचन सुना दिये। सरदार ने रानी के कटे हुए शीश के लम्बे बालों को दो भागों में बाँटकर गाँठ लगाके अपने गले में डाल लिया और रणमत्त होकर शत्रु की सेना पर टूट पड़ा। लड़ते-लड़ते जब एक बार औरंगजेब पर चढ़ बैठा तो बादशाह ने प्राणों की भिक्षा माँगकर जान बचाई, किन्तु उसी समय शत्रु-सैनिक वार से चूड़ावत का सिर कट गया।

क्या संसार के विषय भोगों में लिप्त व्यक्तियों से इस प्रकार के कठोर कर्त्तव्य को निभाने की बात सोची भी जा सकती है? अतः राष्ट्रीय समृद्धि और स्वातन्त्र्य की रक्षा के लिए तप की आवश्यकता है।

आगे मन्त्र में है 'ब्रह्मणा'। ब्रह्मणा के अनेक अर्थों में से यहाँ मुझे अभिप्रेत है आस्तिकता। राष्ट्र की उन्नति के लिए उसके नागरिकों को आस्तिक और धार्मिक होना चाहिए। इस भावना के बिना उनका आचार शुद्ध रहना कठिन ही नहीं, असम्भव है। जब मनुष्य के हृदय में ये विचार बद्धमूल हों कि इस विश्व को नियन्त्रण में रखनेवाली ऐसी शक्ति है जो प्रत्येक अच्छे और बुरे कर्म को देखती है, तथा अच्छे का फल अच्छा और बुरे का फल बुरा अवश्य मिलता है, तो वह बुराई से बचेगा। ऐसा व्यक्ति कभी कालाबाजारी नहीं कर सकता, रिश्वत नहीं ले सकता। हमारे देश की उन्नति में ये दोनों दुर्गुण भी बहुत बाधक हैं। यहाँ सब बुराइयों की जड़ यह दूसरे नम्बर का पैसा है। यह बड़े-बड़े पद पर आसीन व्यक्तियों को भ्रष्ट करके कर्त्तव्यविमुख बना रहा है। यहाँ रिश्वत को ७५ प्रतिशत कर्मचारी अपना अधिकार समझते हैं। स्थिति यहाँ तक विकृत हो गई है कि रिश्वत न लेने वाले का विभाग में जीना दूभर हो गया है। यह भारत वह भारत देश है, जिसके एक शासक अश्वपति ने यह दावा किया था कि-

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः।
नानाहिताग्निर्ना विद्वान्न स्वैरी स्वैरिणी कुतः॥

अर्थात् 'मेरे राज्य में कोई चोर नहीं है, कोई कंजूस और शराबी नहीं है, कोई यज्ञ न करने वाला नहीं है, कोई मूर्ख नहीं है, और जब कोई पुरुष दुराचारी नहीं है तो दुराचारिणी स्त्री तो हो ही नहीं सकती।'

आज बड़े कहलाने वाले राष्ट्रों की क्या स्थिति है?

अमेरिका के फैडरल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टीगेशन के डायरेक्टर श्री जे.एडगर हूवर द्वारा प्रकाशित सन् १६५३ की पहली छमाही में अमरीका के अपराधों की सूची से विदित होता है कि इन छह महीनों में अमरीका में ८०,४७,२६० (अस्सी लाख, सैंतालीस हजार, दो सौ नव्वे) बड़े अपराध हुए। प्रत्येक ४०.३ प्रति मिनिट पर एक हत्या, प्रत्येक २६.४ प्रति मिनिट पर एक बलात्कार, प्रत्येक ८.८ मिनिट पर एक डाका, प्रत्येक ५.७१ मिनिट पर एक चोरी, इसी प्रकार प्रत्येक १४.६ सैंकण्ड पर एक बड़ा अपराध हुआ है।

इससे सर्वथा स्पष्ट है कि राष्ट्र की शान्ति और उन्नति के लिए आस्तिकता और धार्मिकता अत्यन्त आवश्यक हैं।

इसके आगे बात है- **'वित्त ऋते श्रिताः'**- 'भोगने-योग्य समस्त धनादि पदार्थों को न्यायपूर्वक कमावें और न्यायपूर्वक ही उनका उपभोग करें। जहाँ नागरिकों में यह भावना होगी, वहाँ अनावश्यक असन्तुलन नहीं होगा। एक ओर उपभोग की असीम सामग्री और दूसरी ओर पेट भरने को रोटी नहीं, तन ढकने को वस्त्र नहीं, सिर छुपाने को झोंपड़ी नहीं- ऐसे राष्ट्र में शान्ति हो ही नहीं सकती। **अतः राष्ट्रोन्नति का यही वेदोक्त मार्ग है, अन्य नहीं।**

पण्डित शिवकुमार शास्त्री
(साभार- श्रुति सौरभ)

❑❑❑

www.thearyasamaj.org

न्यायालय को नमन

आत्म निवेदन

भारत की आज की राजनीति और राजनेताओं का जो चरित्र बन चुका है वह हमें सोचने पर विवश कर देता है कि जिस समय भारत माता के अनगिनत लाल भरी जवानी में फाँसी के फन्दे को चूम रहे थे वे क्या ऐसे ही भारत का स्वप्न देख रहे थे? कदापि नहीं। 'राजनीति में आप क्यों आये हैं?' यह पूछने पर 'समाज सेवा के लिए' यह उत्तर देते समय नेताओं के मन मस्तिष्क में कुर्सी से जुड़े अधिकार व उसकी बदौलत प्राप्त होने वाले ऐशोआराम के रंगीन स्वप्न तैर रहे होते हैं। अधिकार लिप्सा सर्वोपरि हो गई है। वरना समाज सेवा के क्षेत्र में तो आज भी ऐसे सहस्रों लोग लगे हैं जो खामोशी के साथ अपना काम कर रहे हैं। पर कितने राजनेता यह कार्य कर रहे हैं यह चिन्त्य है।

कुछ समय पूर्व जयपुर में एक रैली के विशाल परिदृश्य पर एक संवेदनात्मक नाटक हुआ। मंच पर माँ ने बेटे को राजनीति में आने की हरी झंडी दी। अश्रुधाराएँ बहाई गईं। कहा गया देश के लिए जहर पिया जा रहा है। सारा वातावरण ऐसा बनाया गया कि जैसे कोई अभूतपूर्व बलिदान राष्ट्र के लिए देने जा रहा है। यहाँ प्रश्न उठता है कि जब आप सुनिश्चित उत्सर्ग मान रोने की हद तक दुःखी हैं तो फिर कदम आगे बढ़ाने की बाध्यता ही क्या है? पर हर कोई जानता है यह ड्रामेबाजी है। असली मुद्दा कुर्सी का है। वह कुर्सी जिसे पाने हेतु कुछ भी कर गुजरने पर नेता लोग अमादा हैं। वह कुर्सी जिसे पाकर राष्ट्रहित को भी बेचने के लिए तैयार हैं।

इस कुर्सी तक पहुँचने का जो रास्ता बनाया गया है वह तिकड़मभरा और अनैतिकता की हद को स्पर्श करता हुआ है। आखिर क्या कारण है कि ३० प्रतिशत से भी अधिक राजनेता ऐसे हैं जिन पर गंभीर किस्म के आपराधिक मुकद्दमे चल रहे हैं और फिर भी वे हमारे नेता हैं और क्योंकि उन्होंने धनबल, बाहुबल और आपसी स्वार्थों पर आधारित समूहबल प्राप्त कर लिया है। अतः उनकी नेतागिरी की दीर्घता भी सुनिश्चित रहेगी। [redacted] मायावती जी की घोषित सम्पत्ति ११०० करोड़ रुपये है और आय से अधिक सम्पत्ति की जाँच करते हुए जाँच संस्थाएँ उन्हें क्लीन चिट दे रही हैं। क्या कोई समझ पायेगा कि एक निर्धन परिवार में जन्म लेने वाली नेत्री ने ऐसा क्या कार्य किया कि ११०० करोड रु. अर्जित कर लिये। कौन-सा ऐसा तरीका है कि चार साल में धन तीन गुना हो जा? इससे पूर्व मुलायम सिंह जी को भी इसी प्रकार के मामले में यह तोता क्लीन चिट दे चुका है।

जाहिर है ये सभी वे तिकड़म हैं जिनसे तेरी भी चुप मेरी भी चुप। देश व नैतिकता जाये भाड़ में। मैं तुझे और तू मुझे नैतिकता का प्रमाण पत्र देता रह। ऐसे में जनता का हताश होना स्वाभाविक है। सत्ता ईमानदारों तक किस प्रकार जायेगी यह यक्ष प्रश्न है? एक विचित्र बात यह है कि जिन नेताओं के ऊपर गंभीर जघन्य आपराधिक मुकद्दमे चल रहे हैं और जिनको दोषी भी न्यायालय द्वारा घोषित किया जा चुका है, वे ऊपरी अदालतों में अपील की अर्जी लगाकर मूँछों को ऐंठते हुए निर्दोष बनकर दनदना रहे हैं और वर्तमान जनतंत्र की जो चुनाव प्रणाली है उसमें जुगत भिड़ाकर पुनः पुनः निर्वाचित होकर आ रहे हैं। जागरूक मतदाता यह सब ठगा हुआ देख रहा है। पर उसके पास इसका कोई इलाज नहीं है।

इसका सम्पूर्ण समाधान तो नहीं हाँ, इस दिशा में कुछ राहत माननीय उच्चतम न्यायालय के १० जुलाई के निर्णय ने दी है। जिन नेताओं को किसी अपराध में दोषी पाया जाकर उन्हें दो साल की सजा सुनाई गई है वे न तो वर्तमान पद पर रह सकेंगे और न ही चुनाव लड़ सकेंगे। इसका नतीजा भी तुरन्त दिखाई पड़ा। राजनेता सकते में रह गए। हड़कम्प मच गया। केन्द्रीय मंत्री रशीद मसूद तथा लालू प्रसाद यादव पर तलवार लटक गई। माननीय उच्चतम न्यायालय द्वारा दिए गए इस क्रान्तिकारी निर्णय को सदैव की भाँति निष्प्रभावी करने हेतु विधायिका सक्रिय हो गई। इस कार्य में सभी दल एकजुट दिखे। सभी बड़े नेताओं ने उच्चतम न्यायालय के उक्त निर्णय से होने वाली हानि का विशद् वर्णन किया। स्पष्ट है कि सभी राजनीतिक दल यह मानते हैं कि ऐसे दागी भ्रष्ट नेतागणों की जरूरत है और यह भी कि उक्त निर्णय यदि प्रभावी हो गया

> लोकसभा के ५४३ सांसदों में से १६२ पर आपराधिक मामले लम्बित हैं तो राज्यसभा के २३२ में से ४० के खिलाफ। देशभर के ४०३२ विधायकों में से १२५८ पर आपराधिक मामले हैं – ए डी आर

www.thearyasamaj.org

तो वे कभी न कभी स्वयं भी इसकी चपेट में आ सकते हैं। स्वयं प्रधानमंत्री महोदय भी कोलगेट में पाक साफ नहीं दिखते। अतः जनप्रतिनिधित्व कानून में संशोधन लाने की कार्यवाही आरम्भ हुई।

किन्हीं कारणों से सत्तारूढ़ दल को इसे लाने की इतनी शीघ्रता थी कि एक अध्यादेश राष्ट्रपति महोदय के सम्मुख भेज दिया गया। स्पष्ट नजर आ रहा था कि उसके मंत्री रशीद मसूद को बचाना था और क्योंकि लालू प्रसाद यादव पर उनके खिलाफ फैसला आने की संभावना थी और सत्तारूढ़ दल ने जिस प्रकार मुलायम सिंह तथा मायावती को क्लीन चिट देकर इस उपकार के बदले २०१४ के चुनावों में उनके समर्थन की संभावना को जीवित रखा उसी प्रकार उक्त अध्यादेश पारित करवाकर लालू-सहयोग को भी जीवित रखना था।

परन्तु न जाने क्या हुआ कि युवराज राहुल ने ठीक उस समय जब पार्टी प्रवक्ता अजय माकन अध्यादेश की शान में कसीदे पढ़े रहे थे अचानक नमूदार हो, कुर्ते की बाहें चढ़ाकर इस अध्यादेश को फाड़ फेंकने योग्य बताकर सभी को हतप्रभ कर दिया। इसके बाद अन्दर खाने की गतिविधियाँ तेजी से चली । एक बार फिर यह साबित करते हुए कि सत्तारूढ़ दल केवल एक वंश का दल है, सारी की सारी पार्टी युवराज के सुर में सुर मिलाकर जनता की भावनाओं की व स्वच्छ राजनीति की पेरोकार बन गई।

जानकार लोग यह प्रश्न अवश्य सामने रख रहे हैं कि अगर राहुल जी ने यह फैसला जनता की आवाज सुनकर लिया तो वह आवाज कॉमनवैल्थ, टूजी, कॉलगेट, राबर्ट वाड्रा के समय क्यों न सुनी? मुजफ्फरनगर की आवाज उन तक नहीं पहुँची? एक बात यहाँ हम अवश्य कह दें कि चाहे यह राजनीतिक तिकड़म हो परन्तु इसकी परिणिति अच्छी हुई। इसके लिए राहुल गाँधी को धन्यवाद दिया जा सकता है। जो भी हो माननीय उच्चतम न्यायालय ने वर्तमान व्यवस्था सुधार के क्रम में एक अवसर पैदा किया है। उससे पूर्व भी न्यायालय ने जातिगत रैलियों पर प्रतिबंध लगाकर जातिगत राजनीति रूपी भारतीय नासूर का ऑपरेशन करने का प्रयास किया था। यद्यपि राजनेता इस गन्दी राजनीतिक व्यवस्था को बनाए रखने का भरसक प्रयास कर रहे हैं। परन्तु पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त टी.एन.शेषन ने चुनाव प्रणाली में जिस सुधार को प्रारम्भ किया था वह बिल्कुल ही निष्फल नहीं हुआ, यह कहा जा सकता है। चुनावों में पूर्वापेक्षा हिंसा भी कम हुई है। बूथ कैप्चरिंग भी उतना आसान नहीं रहा है। हाँ! जातिगत तथा अल्पसंख्यक तुष्टीकरण की राजनीति अभी भी सुरसा के समान मुँह फैलाए खड़ी है। **पर अब जनता को भी तो कुछ करना पड़ेगा।**

'राइट टू रिजेक्ट' के निर्देश भी दिए जा चुके हैं परन्तु ध्यान रक्खें कि इस निर्देश का लाभ तभी है **जब मतदान शत-प्रतिशत तक पहुँचे**। जब तक ऐसी अनिवार्य व्यवस्था कानूनन नहीं होती तब तक जनता को अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी और वह जिम्मेदारी यह होगी कि बिना जाति-पाँति, बिना आर्थिक-प्रलोभन, बिना आलस्य-प्रमाद के किसी भी परिस्थिति में ईमानदार, स्वच्छ चरित्र वाले प्रत्याशियों को **वोट अवश्य करें**।

एक भी संदिग्ध चरित्र वाला व्यक्ति विधायिका में न जाने पावे इस हेतु सुचिन्तित, सुविचारित मतदान करें। मतदान शत-प्रतिशत हो यह हम सबकी जिम्मेदारी है। हो सकता है इससे देश की तकदीर बदल जाये।

अशोक आर्य
मो. ०९३१४२ ३५१०१, ०९००१३३९८३६

विनम्र निवेदन

सभी आर्यजन जानते हैं कि नवलखा महल जब आर्यों को हस्तगत हुआ तब यह नितान्त जीर्ण-शीर्ण अवस्था में था। तब न्यास के संस्थापक अध्यक्ष पूज्य स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती जी के नेतृत्व में इसे न केवल मजबूती प्रदान की गई वरन् यथासंभव आकर्षक प्रेरणा स्थल भी बनाया गया। आज २० वर्षों के पश्चात् पुनः यह जीर्ण-शीर्ण हो गया है। सत्यार्थ प्रकाश जैसे कालजयी ग्रन्थ का प्रणयन जहाँ सम्पूर्ण हुआ हो ऐसे महत्वपूर्ण स्मारक को सुरक्षित करना न्यास की प्राथमिक जिम्मेदारी है। इसी कारण भवन के जीर्णोद्धार तथा सौन्दर्यीकरण की योजना पर कार्य चल रहा है। **सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ, म्यूजीकल फाउन्टेन, महापुरुषों के लाइव साइज प्रेरक चित्र तथा अद्भुत चित्रदीर्घा 'आर्यावर्त' इस स्मृति स्मारक को सर्वथा नया भव्य स्वरूप प्रदान कर रही है।** लगभग ८०% कार्य सम्पन्न हो गया है। पर कार्य अभी जारी है। हमारा विचार था कि मध्य अक्टूबर तक कार्य पूरा हो जायेगा। पर ऐसा न हो सका अतः प्रतिवर्ष अक्टूबर में आयोज्य सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव इस वर्ष आयोजित नहीं हो पा रहा है।

उत्सव के संबंध में अनेकों फोन तथा पत्र आ रहे हैं। महर्षि की इस तपोस्थली के प्रति आपकी श्रद्धा व स्नेह को नमन करते हुए क्षमा याचना के साथ हम निवेदन करना चाहते हैं कि उक्त कारणों से अभी महोत्सव संभव नहीं हो पा रहा है। आगामी तिथि से समय पूर्व ही आपको अवगत करा दिया जावेगा। तब यह भव्य स्मारक अपनी नई रूप सज्जा के साथ, बाहें पसारे आर्यों का स्वागत करने को तत्पर रहेगा।

अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर

www.thearyasamaj.org

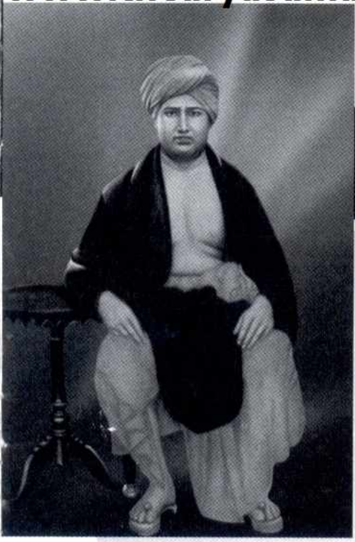

वैज्ञानिक ऋषि दयानन्द

- डॉ. तारा सिंह

विज्ञान का मूल वेदों में है, ऋषि दयानन्द सरस्वती ने इस बात को अपने प्रवचनों में हमेशा कहा। उन्होंने सृष्टि की उत्पत्ति, पृथ्वी, चन्द्रमा की गतिशीलता, सूर्य से विभिन्न ग्रहों का आकर्षण, गणित, ज्योतिष, वैद्यक आदि पर जो प्रकाश डाला उससे ही अंग्रेज विद्वान् उनके प्रशंसक बन गए। सच बात तो यह है कि हमारे ऋषि मुनियों ने किसी प्रयोगशाला में खोज नहीं की बल्कि अपने योगबल व समाधि से जो ज्ञान प्राप्त किया वही आज तक सत्य है।

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने स्पष्ट लिखा है 'परमाणु इसको कहते हैं कि जिसका विभाग फिर कभी न हो सके। परन्तु यह बात केवल एकदेशी है, क्योंकि उसका भी ज्ञान से विभाग हो सकता है। जिसकी परिधि और व्यास बन सकता है। उसका भी टुकड़ा हो सकता है। यहाँ तक कि जब पर्यन्त वह एकरस न हो जाय तब पर्यन्त ज्ञान से बराबर कटता ही चला जायेगा। पृष्ठ ५६

सन् १८७६ में ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका लिखी गई। इसके २१ साल बाद सन् १८९७ में जे.जे. थॉमस ने पहली बार परमाणु के विभाजन में सफलता प्राप्त की इलेक्ट्रॉन की खोज हुई। रदर फोर्ड १९१८ में परमाणु को पुनः तोड़ने में सफल हुए इसके पश्चात् चैडविक ने सन् १९३२ में परमाणु को फिर विभक्त किया। इस तरह परमाणु इलेक्ट्रॉन न्यूट्रोन तथा प्रोटोन में विभक्त किया गया। यानि ऋषि दयानन्द ने जो कहा वह सत्य हुआ **ऐसे वैज्ञानिक थे ऋषि दयानन्द**!

अश्वगन्ध, सफेद मूसली, केसर, सर्पगन्धा, गोखरू, शतावर आदि जड़ी-बूटियों के औषधीय गुणों का ज्ञान लाखों करोड़ों रुपयों से बनी प्रयोगशाला में नहीं बल्कि योग व समाधि से प्राप्त हुआ है। विश्व के प्रथम रसायनशास्त्री ऋषि कणाद एक कुटिया में रहते थे। मान्यता है कि अनाज कटने के बाद जो बालियाँ खेतों में छूट जाती थीं उन्हीं को चुगकर वे आहार लेते थे इसीलिए उनका नाम कणाद पड़ा। आधुनिक युग के सूट-टाई बाँधे, भौतिक सुख हेतु ज्ञान बेचने वाले वैज्ञानिकों के नाम भी लोगों को याद नहीं रहते। नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वालों के नाम भी कुछ समय बाद विस्मृत हो जाते हैं जबकि कणाद, दयानन्द अमर हैं। आज जो औषधीय प्रयोग जानवरों पर होते हैं उसके साइडइफेक्ट भी हम हीं भुगतते हैं क्योंकि जानवरों व मनुष्य की प्रकृति में बड़ा अन्तर होता है। समय ऐसा है कि दवा खाते रहो बस यही इलाज है। प्राचीन आयुर्वेद कहीं लुप्त हो गया है।

हरिनगर, मेरठ २५०००२, मोबाइल ०९७१९९१०८०१,०८४३९५५२०८२

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

सद्भाव और सत्कर्म,
की महिमा है निराली।
खिल उठता है अंतर्मन,
गले लगाती है खुशहाली ॥
प्रकाश-पर्व पर सभी
को शुभकामनाएँ
सत्यार्थ सौरभ
घर-घर पहुँचावें

सत्यार्थप्रकाश मानक संस्करण की कतिपय विशेषताएँ-

- धर्मार्य सभा के प्रधान आचार्य विशुद्धानन्द जी मिश्र के नेतृत्व में दस विद्वानों की समिति द्वारा तैयार।
- पाठभेद की समस्या का सदैव के लिए निराकरण। मुद्रण भूलों का निराकरण कर परिशिष्ट में आधार की जानकारी भी।
- मानक संस्करण का प्रत्येक पृष्ठ उसी शब्द से प्रारम्भ व समाप्त है जैसा कि मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) में है।
- मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) सदैव के लिए पाठक के समक्ष उपस्थित रहेगा।
- सुन्दर गेटअप ''५.६X९.०'' पृष्ठ ६५०, वजन ६०० ग्राम, पेपर बैक।

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी।
आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थ प्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

अब मात्र आधी कीमत में ₹ ४०
३५०० रु. सैंकड़ा
शीघ्र मंगवाएँ

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थ प्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित सत्यार्थ प्रकाश (मानक संस्करण) अवश्य खरीदें।

मात्र ४० ₹

प्राप्ति स्थल
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाबबाग उदयपुर - ३१३००१

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

- न्यास द्वारा ON LINE TEST प्रारम्भ।
- वर्ष में तीन बार दिया जावेगा ५१०० रु. का उपरोक्त पुरस्कार।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से इस ON LINE TEST में भाग लेने का अनुरोध।

बेवसाइट - www.satyarthprakashnyas.org

www.thearyasamaj.org

ऋषि–निर्वाण दिवस पर विशेष

दयानन्द तो बस दयानन्द ही थे

कृष्ण चन्द्र गर्ग

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन में अन्दर बाहर सत्य और सात्विकता ओतप्रोत थी। वे हर प्रकार के आडम्बर से परे थे। लोकोपकार उनका एकमात्र लक्ष्य था। परमात्मा ने उन्हें बुद्धिबल और नैतिक बल गजब का दिया था। उन्होंने समाज की स्थिति का तथा पुस्तकों का स्वाध्याय खूब किया था। उनकी स्मरण शक्ति कमाल की थी। व्याख्यान वे सरल और स्पष्ट भाषा में दिया करते थे। उनकी शैली मधुर और तर्कपूर्ण होती थी। उन्होंने सोई हुई हिन्दू जाति को जगाया। उसके खोए हुए गौरव को वापिस दिलाया। उसकी कायरता, अज्ञानता, भीरुता और अन्धविश्वास को धोया। महर्षि दयानन्द ने डंके की चोट से ऐलान किया कि आर्य लोग जो आजकल हिन्दू कहलाते हैं भारतवर्ष के ही मूल निवासी हैं। इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि आर्य भारत में कहीं बाहर से आए थे। आर्यों का संस्कृत भाषा में साहित्य ही संसार में सबसे पुराना साहित्य है। संस्कृत के किसी ग्रन्थ में नहीं लिखा कि आर्य भारतवर्ष में कहीं बाहर से आकर बसे थे। इस देश का सबसे पहला नाम आर्यावर्त्त था अर्थात् आर्यों का देश। उससे पहले इसका कोई और नाम न था। इस प्रकार उन्होंने हिन्दुओं के मनोबल को बढ़ाया।

स्वामी जी हिन्दुओं की सभी कमियों और कमजोरियों के लिए पुराणों को जिम्मेदार मानते थे। वे पुराणों को महर्षि वेद व्यास जी की रचना न मानते थे। वे लिखते हैं "जो अठारह पुराणों के कर्ता व्यास जी होते तो उनमें इतने गपोड़े न होते क्योंकि शारीरिक सूत्र, योगदर्शन के भाष्य आदि व्यास जी कृत ग्रन्थों को देखने से पता लगता है कि वे बड़े विद्वान्, सत्यवादी, धार्मिक, योगी थे। वे ऐसी झूठी बातें कभी न लिखते जैसी पुराणों में हैं।"

स्वामी जी मूर्तिपूजा को भारत के सारे अनिष्टों का मूल मानते थे। पुराणों ने ही मूर्तिपूजा को प्रोत्साहित किया और हिन्दुत्व की कब्र खोद दी। अवतारवाद, जन्म पर आधारित जाति-प्रथा, सती-प्रथा, विधवा-विवाह का निषेध आदि, अनेक ऐसी कुरीतियाँ जिनके कारण हिन्दू बदनाम हैं, सबको पुराणों में मान्यता प्राप्त है। पुराणों की ऐसी मान्यताएँ वेद-विरुद्ध हैं। यदि पुराण और पौराणिक विचार हिन्दुओं में न होते तो ईसाईयों और मुसलमानों को हिन्दुओं के विरोध में कहने को कुछ भी न मिल पाता और न ही इतनी आसानी से हिन्दू मुसलमान और ईसाई बनते। हिन्दू मत कच्चे धागे की तरह बन गया था जिसे हलके झटके से तोड़ा जा सकता था। महर्षि दयानन्द ने पुराणों का पुरजोर खण्डन किया और वैदिक धर्म की श्रेष्ठता को प्रकट किया। इस्लाम और ईसाईयत की कमियाँ और खराबियाँ दिखाकर हिन्दुओं में आत्मविश्वास पैदा किया जिससे उन्हें अपने वैदिक धर्म में बने रहने की प्रेरणा मिली और हिन्दू मत लोहे की छड़ सा मजबूत हो गया।

महर्षि दयानन्द सत्य के प्रबल पक्षधर थे। आर्य समाज के दस नियमों में चौथा नियम उन्होंने दिया – 'सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए'। वे मानते थे कि मनुष्य का आत्मा सत्य-असत्य को जानने वाला है। परन्तु पण्डित लोग अपनी प्रतिष्ठा, हानि और निन्दा के भय से सत्य को प्रकट नहीं करते। उन्होंने 'स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश' में उपनिषद का निम्न श्लोक उद्धृत किया है –

न हि सत्यात्परो धर्मो नानृतात्पातकं परम्।
न हि सत्यात्परं ज्ञानं तस्मात्सत्यं समाचरेत्॥

अर्थात् सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है, झूठ से बढ़कर कोई पाप नहीं है और सत्य से बढ़कर कोई ज्ञान नहीं है। इसलिए सत्य का आचरण करें।

महर्षि दयानन्द मानते थे कि हमारा नाम आर्य है, हिन्दू नहीं। आर्य का अर्थ है श्रेष्ठ पुरुष। अरब के लोग काफिर और दुष्ट को हिन्दू कहते हैं। विदेशी मुसलमानों ने हमें हिन्दू नाम दिया है। स्वामी जी श्री कृष्ण जी को एक महापुरुष मानते थे। सत्यार्थप्रकाश में वे लिखते हैं "देखो! श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र धर्मात्माओं के समान है, जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरणपर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो, ऐसा नहीं लिखा और इस भागवत वाले ने अनुचित मनमाने दोष लगाए हैं। दूध, दही, मक्खन आदि की चोरी लगाई और कुब्जा दासी से समागम, परस्त्रियों से रासमण्डल क्रीड़ा आदि मिथ्या दोष श्रीकृष्ण जी में लगाए हैं। इसको पढ़-पढ़ा, सुन-सुना के अन्य मत वाले श्रीकृष्ण जी की बहुत सी निन्दा करते हैं। जो यह भागवत न होता तो श्रीकृष्ण जी के सदृश महात्माओं की झूठी

www.thearyasamaj.org

निन्दा क्योंकर होती?"
महाभारत के उद्योगपर्व (विदुरनीति) में एक श्लोक है -
पुरुषा बहवो राजन् सततं प्रियवादिनः।
अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः॥
महात्मा विदुर धृतराष्ट्र से कहते हैं - 'हे राजन! इस संसार में दूसरे को निरन्तर प्रसन्न करने के लिए प्रिय बोलने वाले प्रशंसक लोग बहुत हैं। परन्तु सुनने में अप्रिय लगे और वह कल्याण करने वाला वचन हो उसका कहने और सुनने वाला पुरुष दुर्लभ है।'

महर्षि दयानन्द ऐसे ही हितकारक वचन कहने वाले विरले मनुष्य थे। वे राजे-महाराजाओं के सामने, बड़े से बड़े अंग्रेज अफसरों की उपस्थिति में, मुल्ला मौलवियों और पण्डों की मौजूदगी में निर्भीक होकर सबके हित की सत्य बात कहा करते थे।

महर्षि दयानन्द ने राष्ट्रीय स्वाभिमान को जगाया, विशुद्ध भारतीयता पर बल दिया। सत्य-असत्य विवेक की प्रवृत्ति को जगाया, बुद्धिवाद को बढ़ावा दिया, अन्धविश्वास और रूढ़िवाद का खण्डन किया।

स्वामी जी मूर्तिपूजा को सब बुराईयों की जड़ मानते थे और मन्दिरों को उनके अड्डे मानते थे। जुलाई १८६६ की बात है। कानपुर में पं. गुरुप्रसाद और प्रयागनारायण ने 'कैलास' और 'बैकुण्ठ' नामक दो मन्दिर बहुत रुपया लगाकर बनवाए थे। स्वामी जी ने उनसे कहा था कि आप लोगों ने लाखों रुपया व्यर्थ खो दिया। इससे तो यह अच्छा था कि कान्यकुब्ज़ कन्याओं का जो ३०-३० वर्ष की कुमारी बैठी हैं, विवाह करवा देते या कोई कला-कौशल का कारखाना खोलते जिससे देश और जाति का भला होता। स्वामी जी का दरबार मित्र, शत्रु सबके लिए खुला था। वे सबके साथ प्रेम से बर्ताव करते थे। परन्तु यदि कोई उनके साथ दुष्टता का व्यवहार करने लगता तो वे रौद्ररूप धारण करके उसे दण्ड देने को तैयार हो जाते थे।

सन १८७२ में भागलपुर में प्रसंग आने पर स्वामी जी ने कहा कि हिन्दुओं में जो मुसलमानों के प्रति सहानुभूति का अभाव और द्वेष का भाव है उसका कारण यह नहीं कि हिन्दुओं को मुसलमानों से स्वाभाविक द्वेष है, वास्तव में उसका कारण हिन्दुओं के प्रति मुसलमानों का व्यवहार है।

महर्षि दयानन्द के जीवन का सर्वोपरि लक्ष्य परोपकार था। सन् १८६८ के आरम्भ की बात है। कर्णवास में एक दिन पण्डित इन्द्रमणि ने स्वामी जी से कहा कि आप अवधूत होकर खण्डन-मण्डन के बखेड़े में क्यों पड़े हैं। तो उन्होंने उत्तर दिया कि "मेरे लिए बखेड़ा नहीं है, प्रत्युत् यह ऋषियों का ऋण चुकाना है। स्वार्थी लोगों ने ऋषि-सन्तान को कुरीतियों में फँसा रखा है। मुझसे उसकी यह दीन-दशा देखी नहीं जाती। मैंने उसे सन्मार्ग पर लाने का प्रण कर लिया है।" इसीलिए महर्षि ने आर्य समाज का छठा नियम बनाया- 'संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है .....।' इसी प्रकार आर्य समाज का नौवां नियम बनाया - 'प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए। किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।'

स्वामी जी कहते थे कि पत्थरों को पूजने से पण्डितों की बुद्धि पत्थर हो गई है। इस कारण से वे सत्य-सिद्धान्तों को समझने में असमर्थ हैं। मैं उनकी जड़पूजा छुड़वाकर उनकी बुद्धि को निर्मल करने का प्रयत्न कर रहा हूँ। वे यह भी कहते थे "मेरा काम लोगों के मनमन्दिरों से मूर्तियाँ निकलवाना है, ईंट-पत्थर के मन्दिरों को तोड़ना-फोड़ना नहीं है।

सन् १८७८ में अजमेर में राय बहादुर श्यामसुन्दरलाल ने स्वामी जी से कहा कि आप मूर्तिपूजा पर इतना तीव्र आक्रमण क्यों करते हैं, उसे थोड़ा नम्र कर देने से भी तो काम चल सकता है। स्वामी जी ने उत्तर दिया - मूर्तिपूजा पर मृदु आक्रमण करने व उससे किसी प्रकार की सन्धि करने से हमारे सिद्धान्तों की भी वही दशा होगी जो अन्य सिद्धान्तों की हुई है और कुछ समय के बाद आर्य समाज पौराणिक होकर हिन्दुओं में मिल जाएगा।

भोजन कैसे भ्रष्ट होता है - फर्रुखाबाद में एक दिन एक साध स्वामी जी के लिए कढ़ी और चावल बनाकर लाया और उन्होंने उसे खा लिया। इस पर ब्राह्मणों ने कहा कि आप भ्रष्ट हो गये जो साधों के घर का भोजन खा लिया। स्वामी जी ने उत्तर दिया कि भोजन दो प्रकार से भ्रष्ट होता है - एक तो यदि किसी को दुःख देकर धन प्राप्त किया जाए और उससे अन्न आदि खरीद कर भोजन बनाया जाए, दूसरे भोजन मलिन हो या उसमें कोई मलिन वस्तु गिर जाए। साध लोगों का मेहनत का पैसा है, उससे प्राप्त किया हुआ भोजन उत्तम है।

देश की भाषा हिन्दी- महर्षि दयानन्द देश की एकता के लिए आवश्यक समझते थे कि सारे देश की भाषा एक हिन्दी हो। इसलिए वे अपने ग्रन्थों का किसी दूसरी भारतीय भाषा में अनुवाद न करवाना चाहते थे। वे चाहते थे कि सभी देशवासी उनके ग्रन्थों को हिन्दी में ही पढ़ें। वे मानते थे कि भारतवासियों को हिन्दी भाषा सीख लेना कुछ कठिन नहीं है। जो इस देश में जन्म लेकर अपनी भाषा सीखने का परिश्रम नहीं करता उससे और क्या आशा की जा सकती है। उनके ग्रन्थों का अंग्रेजी आदि विदेशी भाषाओं में अनुवाद के वे विरोधी न थे। सन् १८७० में मिर्जापुर में स्वामी जी ने एक बंगाली बनवारीलाल को अंग्रेजी सीखने के लिए और मैक्समूलर कृत वेदों का अंग्रेजी अनुवाद सुनने के लिए नौकर रखा था। सन् १८७६ में दानापुर

www.thearyasamaj.org

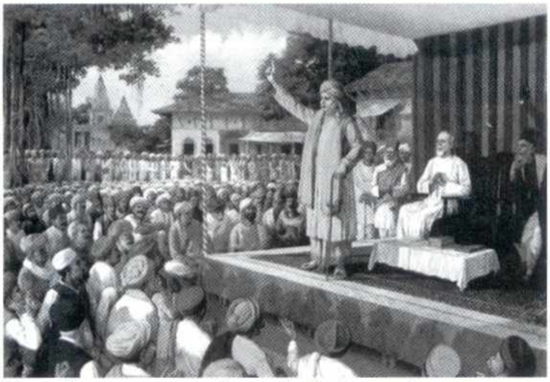

में एक दिन एक सज्जन ने स्वामी जी से कहा कि आप इस्लाम के विरुद्ध न कहा करें। उस समय तो स्वामी जी ने कोई उत्तर न दिया। परन्तु सांयकाल को जो व्याख्यान दिया वह आदि से अन्त तक इस्लाम के सिद्धान्तों पर ही था जिसमें उनकी तीव्र समालोचना की। व्याख्यान का आरम्भ ही इन शब्दों से किया कि मुझे कहा गया है कि मुसलमानी मत का खण्डन मत करो, परन्तु मैं सत्य को छिपा नहीं सकता। जब मुसलमानों की चलती थी तब वे हम लोगों का तलवार से खण्डन करते थे। अब यह अन्धेर देखो कि मुझे उनका जिह्वा मात्र से खण्डन करने से मना करते हैं। मैं ऐसा अच्छा राज्य पाकर भला किसी की पोल खोलने से कभी रुक सकता हूँ।

एक दिन पण्ड्या मोहनलाल ने स्वामी जी से प्रश्न किया कि भारत का पूर्ण हित और जातीय उन्नति कब होगी। स्वामी जी ने उत्तर दिया कि **एक धर्म, एक भाषा और एक लक्ष्य बनाए बिना ऐसा होना मुश्किल है।**

वेदों के सम्बन्ध में महर्षि लिखते हैं "मैं वेदों में कोई बात युक्ति विरुद्ध वा दोष की नहीं देखता और उन्हीं पर मेरा मत है।" महर्षि का यह मत सभी ऋषि-मुनियों के मत के अनुकूल ही है। वैशेषिक दर्शन में महर्षि कणाद लिखते हैं- **बुद्धिपूर्वा वाक्यकृतिर्वेदे**। अर्थात् वेद का प्रत्येक वाक्य समझदारी से बना है। महर्षि मनु कहते हैं- *यस्तर्केणानुसन्धते तं* **धर्मं** *वेद नेतरः*। अर्थात् जो युक्ति से सिद्ध हो वही वेद का धर्म है, और कोई नहीं। महर्षि दयानन्द वेदों को ईश्वरकृत तथा सब सत्य विद्याओं का पुस्तक मानते थे। वे वेद पढ़ने का अधिकार स्त्री-पुरुष, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सबका मानते थे और वे मानते थे कि वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

महर्षि दयानन्द का स्वाध्याय बहुत विस्तृत था। "भ्रान्ति निवारण" पुस्तक में पण्डित महेशचन्द्र न्यायरत्न को उत्तर देते हुए वे लिखते हैं - "मैं अपने निश्चय और परीक्षा के अनुसार ऋग्वेद से लेके पूर्व मीमांसा पर्यन्त अनुमान से तीन हजार ग्रन्थों के लगभग मानता हूँ।"

अंग्रेजी राज्य के सम्बन्ध में- २३ नवम्बर १८८० को थियोसोफिकल सोसायटी की मैडम ब्लेवेट्स्की को लिखे पत्र में स्वामी दयानन्द भगवान को धन्यवाद देते हैं कि अंग्रेजी राज्य में मुसलमानों के अत्याचार से कुछ-कुछ छुटकारा मिला है। "मैं तथा अन्य सज्जन लोग पुस्तकें लिखने, उपदेश देने तथा धर्म के विषय में स्वतन्त्र हैं। इसका कारण इंग्लैण्ड की महारानी, पार्लियामेंट तथा भारत में राज्याधिकारी धार्मिक, विद्वान् और सुशील हैं। अगर ऐसा न होता तो स्वतन्त्रता से व्याख्यान देना, वेदमत प्रचारक पुस्तकें लिखना सम्भव न होता और आज तक मेरा शरीर भी बचना कठिन था। इसलिए इन सभी महानुभावों को हम धन्यवाद देते हैं।"

पण्डित महेन्द्रपाल आर्य (पूर्व नाम मौलवी महबूब अली) जिला बागपत बड़ौत के पास बरवाला में एक बड़ी मस्ज़िद के इमाम थे। महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थप्रकाश को पढ़कर वे आर्य समाज में आ गये। वे कहते हैं "मैं अज्ञानियों के टोले से निकल कर ज्ञानियों के टोले में आया हूँ। मुसलिम समाज अनपढ़ व अन्धविश्वासियों का समाज है। आर्य समाज पढ़े लिखे बुद्धिजीवियों का समाज है। बाकी जिन्दगी मैं पढ़े लिखे अन्धविश्वासमुक्त नेक लोगों के साथ बिताना चाहता हूँ।"

सत्यार्थप्रकाश के सम्बन्ध में प्रसिद्ध देशभक्त लाला हरदयाल एम.ए. के विचार - **"इस महान् ग्रन्थ के अध्ययन से मेरी विचारधारा बदल गई है। सोई हुई जाति के स्वाभिमान को जागृत करने वाला यह ग्रन्थ अद्वितीय है।"**

वीर सावरकर की सत्यार्थप्रकाश पर टिप्पणी - "हिन्दू जाति की ठण्डी रगों में गर्म खून का संचार करने वाला यह ग्रन्थ अमर रहे। सत्यार्थप्रकाश की विद्यमानता में कोई विधर्मी अपने मजहब की शेखी नहीं मार सकता।"

महर्षि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश के अन्त में स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश में मनुष्य की परिभाषा में लिखते हैं - "मनुष्य उसी को कहना कि जो मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दुख और हानि-लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान् से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से .... अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करे। इस काम में चाहे उसको कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जावें, परन्तु इस मनुष्यपनरूप धर्म से पृथक कभी न होवे।" महाराजा भर्तृहरि जी का एक श्लोक है -

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा,
न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः॥

www.thearyasamaj.org

अर्थात् नीति को जानने वाले लोग चाहे निन्दा करें या प्रशंसा करें, धन आए या जाए, मृत्यु अभी आ जाए या चिरकाल के बाद आए, परन्तु धैर्यवान लोगों के पग न्याय के मार्ग से विचलित नहीं होते। यह श्लोक महर्षि दयानन्द के जीवन पर पूरी तरह घटित होता है। सभी प्रकार के बिघ्न-बाधाओं, खतरों और प्रलोभनों से टक्कर लेते हुए स्वामी जी सत्य और न्याय के प्रचार पर डटे रहे।

प्रसिद्ध कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ने कहा था - **'हमारा सबसे अधिक उपकार महर्षि दयानन्द ने किया है।'**

महान् कहानीकार उपन्यास सम्राट मुन्शी प्रेमचन्द की एक कहानी है 'आपका चित्र'। कहानी के नायक ने अपने कमरे में स्वामी दयानन्द का एक चित्र लटका रखा है। वह बता रहा है कि यह चित्र उसने क्यों लटका रखा है। "मैं उसे केवल इस कारण से अपने कमरे में लटकाए हुए हूँ कि स्वामी जी के जीवन का उच्च और पवित्र आचरण सदा मेरी आँखों के सामने रहे। जिस घड़ी सांसारिक लोगों के व्यवहार से मेरा मन ऊब जाए, जिस समय प्रलोभनों के कारण पग डगमगाएँ अथवा प्रतिशोध की भावना मेरे मन में लहरें लेने लगे अथवा जीवन की कठिन राहें मेरे साहस व शौर्य की अग्नि को मन्द करने लगे, उस विकट बेला में उस पवित्र मोहिनी मूर्ति के दर्शनों से आकुल व्याकुल हृदय को शान्ति हो, दृढ़ता धीरज बने रहें, क्षमा व सहनशीलता के मार्ग पर पग चलते चलें तथा मैं अनुभव के आधार पर कह सकता हूँ कि इस चित्र से मुझे लाभ पहुँचा है और एक बार नहीं, कई बार।

□□□

प्यार करने पर आघात देता है,
क्षमा करने पर दुर्बल समझता है।
उपदेश देने पर मुड़कर बैठता है,
विश्वास करने पर हानि पहुँचाता है।
आदर करने पर खुशामद समझता है,
आश्रय देने पर सिर पर चढ़ता है।
उपकार करने पर अस्वीकार कर देता है,
सहायता करने वाले को मूर्ख समझता है।
जेब में पैसा होने पर भी उधार माँगता है,
अपने फायदे के लिये दूसरों का नुकसान करता है।
स्वयं तो माँ बाप की सेवा करता नहीं,
अपनी औलाद से इस बात की उम्मीद करता है।
दु:ख में भगवान को याद करता है, सुख में भूल जाता है।।

संकलनकर्ता : नारायण मित्तल

ऐ मेरे प्यारे ऋषि

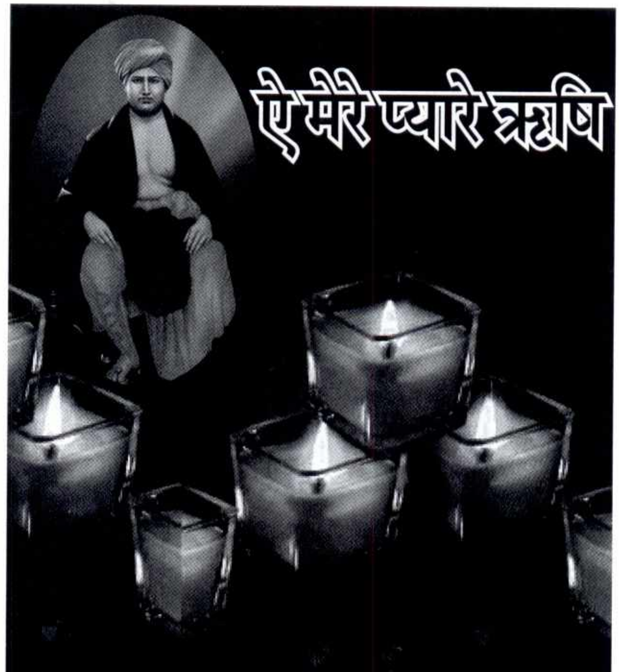

जलते कितने दीप बुझ गए,
चलते सूरज-चाँद रुक गए।
तुमने दिया जलाया ऐसा,
आँधी जिसको शीश नवाए।
बादल तुम्हें ले गया कोई,
बरस रहे फिर भी अमृत-से।
जितना गया मिटाया तुमको,
उतने बने अडिग पर्वत-से।
कोई कंचन मेंट न पाया,
माटी के पद-चिह्न तुम्हारे।
तुमने चरण बढ़ाया ऐसा,
मंजिल जिसको शीश नवाए।
ऐसा मंत्र जगाया तुमने,
गंगा-जल जिस पर न्योछावर।

ऐसा रचा तपोवन तुमने,
राजमहल जिस पर न्योछावर।
बना हृदय ही देवालय 'ओ३म्',
वाणी शंखध्वनि-सी गूँजी।
उठी ओ३म् की मूरत ऐसी,
मन्दिर जिसको शीश नवाए।
जो तुमने कह दिया वचन से,
वेदों की बन गई ऋचाएँ।
जो तुमने लिख दिया कलम से,
युग-युग की बन गई कथाएँ।
तीर्थ बन गया हर कण जिसको,
मिला पाँव का परस तुम्हारा।
ऐसी पुण्य-कथा लिख डाली,
संगम जिसको शीश नवाए।

कवि- श्री जगदीश चन्द्र 'जीत'

दयानन्द दर्शन - ऋषि जीवन के सुन्दर चित्रों से सजी हुई व हिन्दी, अंग्रेजी में ऋषि जीवन को रेखांकित करती हुई यह भव्य एलबम विश्व प्रसिद्ध व प्रशंसित है। प्रत्येक ऋषि भक्त के पास एक प्रति अवश्य होनी चाहिए। यह न्यास की Best seller भी है। स्टॉक सीमित है। ऋषि भक्त शीघ्र मंगवाएँ। मूल्य १२५/-

डीलक्स लाइब्रेरी संस्करण २२५/-
डाक व्यय अतिरिक्त

पत्रिका से सम्बन्धित किसी प्रकार की जानकारी/शिकायत के लिये निम्न चलभाष पर सम्पर्क करें।
09314535379

दूरभाष : ०२९४-२४१७६९४, चलभाष ०९३१४५३५३७९
कृपया न्यास की वेबसाईट : www.satyarthprakashnyas.org पर अवश्य देखें

प्रत्येक माह की 20 तारीख तक भी पत्रिका न मिलने पर कृपया इसी चलभाष पर सम्पर्क करें।

www.thearyasamaj.org

Vande Mataram

Brig Chitranjan Sawant

Vande Mataram had indeed worked like a Ved mantra. This is what the author and poet, Bankim Chandra Chattopadhyaya had prophesied in answer to the criticism that the words used in the song were too difficult to pronounce. He said to his critics "**I may not live to see its popularity, but this song will be sung by every Indian like a Ved mantra**". How true his words were. The history of the Indian freedom struggle bears a testimony to it. Vande Mataram has spontaneity and emotional appeal to arouse patriotism even in a slavish heart. The song has the capability to transcend barriers of caste, creed, region and religion. It was sung with gusto by patriotic Indians throughout the length and breadth of Bharat. When the song was sung , with the fading notes of the last stanza, the emotionally surcharged crowd of men and women would raise the slogan : Bharat Mata Ki Jai. The sound and the echo shook the mighty British Empire to its foundation.

Bankim babu wrote Vande Mataram in one sitting in his native village, Naihati, just a few miles away from the metropolis, Calcutta..**It was Akshay Naomi which fell on a Sunday on 7 November 1875** and Bankim babu, a Deputy Collector of the British Raj was relaxing in his ancestral home. His mind and heart were in turmoil. The English masters were forcing their own national anthem, God Save the Queen, down the throat of all Indians. Bankim babu felt the divine inspiration and words came pouring out of his heart and on to his pen. An immortal song, Vande Mataram, stood composed. It was seven years later that Vande Mataram was incorporated in the famous novel of the author, Anand Math, dealing with the history of the Sanyasi uprising in Dacca, North Bengal and other places from 1763 to 1780. The Dharm Yudh was against the foreign domination. The English and their collaborators were targeted. The saints uprising has inspired the youth of Bengal ever since. Indeed, it was a never fading source of inspiration for the patriots all over Bharat.

VANDE MATARAM IS OUR NATIONAL SONG; EQUAL IN STATUS WITH THE NATIONAL ANTHEM. ONE WHO INSULTS IT, MUST BE INCARCERATED.

No less a person than Gurudev Ravindra Nath Tagore lent his voice to Vande Mataram when he sang it in the session of the Indian National Congress in Calcutta in 1896. It was a stirring moment, although the tempo was rather slow compared to that of the rendering of Vande Mataram by Lata Mangeshkar in the movie, Anand Math. Nevertheless, Vande Mataram had come out of the rural landscape to play its all important role on the national stage.

Bengal loved the song and the rest of India was not far behind. Vande Mataram was sung in many tunes, in many languages by many men and women voluntarily. North, South, East and West of India were equally involved.

1905 was the high noon of the national fervour that Vande Mataram generated. Lord Curzon, the then Viceroy, passed a decree dividing Bengal into two parts, east and west. The British are at their best when they play the game called, Divide and Rule. However, it was rather unfortunate for the rulers that the Bang Bhang united India as a whole. Men and women of all faiths walked the streets of towns and talukas of Bengal singing Vande Mataram with religious fervour. It was a

www.thearyasamaj.org

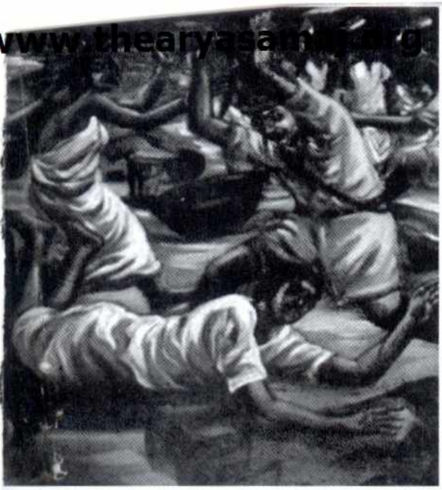

sight to be seen to be believed. The decree of Curzon was rescinded. But the British were back to their game of dividing the united people. They made some elements believe that singing Vande Mataram was a sign of Hindu domination. Their trick worked. The bogey of religion took its toll. The Muslim League was born. No one was happier than the British masters.

The Indian National Congress, at its Varanasi session, adopted Vande Mataram as the national song on 7th September 1905. The cohesive spirit that the song generated could not be lost sight of by the national leaders. The momentous decision was taken unanimously a century ago. Since then the national song is sung at all sessions not only of the Congress but also the Bhartiya Janata Party and some others. It is sung in the closing session of the parliament too. Truly national in word and deed.

Vande Mataram has all along been a song of patriotism and unification. Gandhi and Jinnah sang it together on the Congress platform till the latter quit the Congress as he was a non-believer in the principle of Swaraj . Of course, Maulana Abul Kalam Azad and Shri Purshottam Das Tandon, born rivals, were in the forefront in singing Vande Mataram at the beginning of the session everywhere. Shri Rafi Ahmad Kidwai , out and out a nationalist, never had a second thought about singing Vande Mataram. Nevertheless, the divisive forces were working overtime at the behest of their British masters to upset the applecart. How sad, the mischief mongers had their way. The rest is history. Is history repeating itsef ? Time alone will tell.

Singing Vande Mataram the Indian people had waged the war of Independence non-violently. The song was all along the National Anthem to the rank and file of freedom fighters. A committee comprising Nehru, Azad, Subhash Bose and Narendra Dev had said that the first two stanzas of the song had no reference to any religion and should be our anthem. It came as a rude shock when the controversial decision to make Jana Gana Mana the national anthem was announced on 24 January 1950. However, the words of Dr Rajendra Prasad, President of the Constituent Assembly, came as a soothing balm. He said, "...the song Vande Mataram , which has played a historic part in the struggle for Indian freedom, shall be honoured equally with Jana Gana mana and shall have equal status with it."

Taking a look at the English translation of Vande Mataram, done by Shree Aurobindo, one may safely surmise that the storm in a tea cup brewing at the behest of separatists will blow away and patriotism will prevail. The stanzas of the song are given below :

Mother, I bow to Thee !
Rich with thy hurrying streams
Bright with orchard gleams.
Cool with thy winds of delight
Green fields waving Mother of might, Mother free.
Glory of moonlight dreams, Over thy branches and lordly streams,
Clad in thy blossoming trees, Mother, giver of ease
Laughing low and sweet! Mother I kiss thy feet,
Speaker sweet and low!
Mother, to thee I bow.

Indeed the original song in Bangala with a rich dose of Sanskrit words is soul stirring. Although the British government in India had banned the national song Vande Mataram, it surfaced and resurfaced. The British failed in suppressing the spirit of independence. The Indians won their freedom. Let us now all sing in unison the song of the People, Vande Matram.

❑❑❑

www.thearyasamaj.org

एक मुकद्दमा

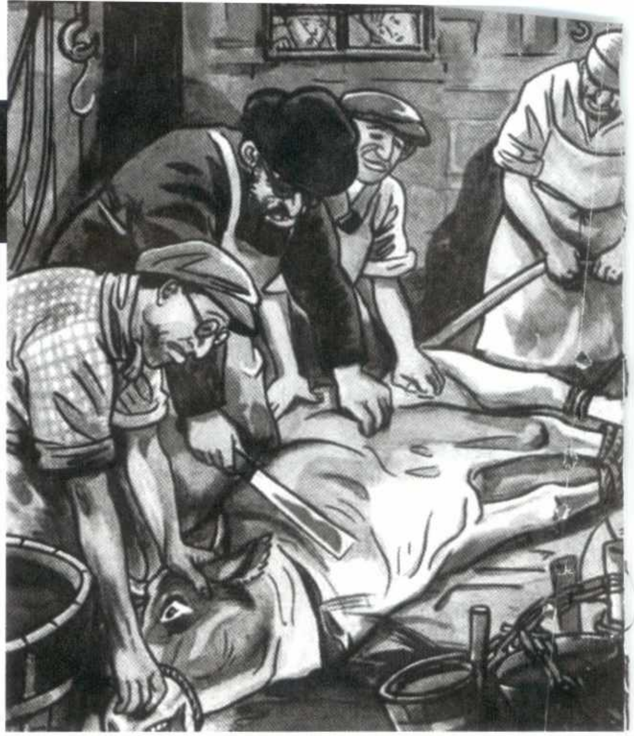

पहले आप सब ये जान लें भारत में ३६०० कत्लखाने ऐसे हैं जिनके पास गाय काटने का लाइसेन्स है ! इसके इलावा ३६००० कत्लखाने गैर कानूनी चल रहे हैं ! प्रति वर्ष ढाई करोड़ गायों का कत्ल किया जाता है ! १ से सवा करोड़ भैंसों का और २ से ३ करोड़ सूअरों का, बकरे-बकरियाँ, मुर्गे मुर्गियाँ आदि छोटे जानवरों की संख्या भी करोड़ों में है, गिनी नहीं जा सकती ! तो भारत एक ऐसा देश बन गया है जहाँ कत्ल ही कत्ल होता है !

एक संस्था है भारत में 'अखिल भारतीय गौ सेवक संघ' जिससे राजीव भाई जुड़े हुए थे। और एक दूसरी संस्था है उसका नाम है अहिंसा आर्मी ट्रस्ट ! इन दोनों ने सुप्रीम कोर्ट मे मुकद्दमा दाखिल किया और बाद में पता चला कि गुजरात सरकार भी मुकद्दमे में शामिल हो गई ! तो सुप्रीम कोर्ट में मुकद्दमा किया गया कि गाय और गौ वंश की हत्या नहीं होनी चाहिए ! तो सामने बैठे कसाई लोगों ने कहा क्यूँ नहीं होनी चाहिए? जरूर होनी चाहिए! तो राजीव भाई की तरफ से सुप्रीम कोर्ट मे अपील की गयी कि ये एक-दो जज का मामला नहीं है, इसमें बड़ी बैंच बनाई जाए! भारत के थोड़े दिन पहले चीफ जस्टिस रहे श्री लाहोटी ने अपनी अध्यक्षता में ७ जजों की एक constitutional bench बनाई जिसमें २००४ से सितम्बर २००५ तक मुकद्दमे की सुनवाई चली! कसाइयों की तरफ से लड़ने वाले भारत के सभी बड़े-बड़े वकील जो ५०-५० लाख तक फीस लेते हैं। सारे सभी बड़े वकील कसाइयों के पक्ष में! राजीव भाई की तरफ से लड़ने वाला कोई बड़ा वकील नहीं क्यूँकि फीस देने का इतना पैसा नहीं! और माननीय न्यायालय ने कहा, हम आपको एम् इ एस्क्युरी देंगे यानि कोर्ट के द्वारा दिया गया वकील और फिर हमने ये केस लड़ना शुरू किया! तो मुकद्दमे में कसाईयों द्वारा गाय काटने के लिए वही सारे कुतर्क रखे गए जो कभी शरद पँवार द्वारा बोले गए या इस देश के ज्यादा पढ़े-लिखे लोगों द्वारा बोले जाते हैं या देश के पहले प्रधानमंत्री नेहरू द्वारा कहे गए।

कसाईयों के कुतर्क

१. गाय जब बूढ़ी हो जाती है तो बचाने में कोई लाभ नहीं उसे कत्ल करके बेचना ही बढ़िया है। और हम भारत की अर्थ व्यवस्था को मजबूत बना रहे हैं क्यूँकि गाय का मांस export कर रहे हैं।

२. भारत में गाय के चारे की कमी है। भूखी मरे इससे अच्छा ये है हम उसका कत्ल करके बेचें।

३. भारत में लोगों को रहने के लिए जमीन नहीं है गाय को कहाँ रखें?

४. इससे विदेशी मुद्रा मिलती है।

और सबसे खतरनाक कुतर्क जो कसाइयों की तरफ से दिया गया कि गाय की हत्या करना हमारे धर्म इस्लाम में लिखा हुआ है। (**this is our religious right**)

कसाई लोग कौन हैं आप जानते हैं? मुसलमानों में एक कुरैशी समाज है जो सबसे ज्यादा जानवरों की हत्या करता है। उनकी तरफ से ये कुतर्क आये।

राजीव भाई की तरफ से बिना क्रोध प्रकट किए बहुत ही धैर्य से इन सब कुतर्कों का तर्कपूर्वक जवाब दिया गया।

उनका पहला कुतर्क गाय का मांस बेचते हैं तो आमदनी होती है देश को, तो राजीव भाई ने सारे आँकड़े सुप्रीम कोर्ट में रखे कि एक गाय को जब काट देते हैं तो उसके शरीर में से कितना मांस निकलता है? कितना खून निकलता है? कितनी हड्डियाँ निकलती हैं? एक स्वस्थ गाय का वजन ३ से साढ़े ३ क्विंटल होता है उसे जब काटें तो उसमें से मात्र ७० किलो मांस निकलता है। एक किलो गाय का मांस जब भारत से export होता है तो उसकी कीमत है लगभग ५० रुपए। तो ७० किलो का ५० से गुणा करो। ७०X५०= ३५०० रुपए। खून जो निकलता है वो लगभग २५ लीटर होता है। जिससे कुल कमाई १५०० से २००० रुपए होती है। फिर हड्डियाँ निकलती हैं वो भी ३०-३५ किलो हैं। जो १०००-१२०० के लगभग बिक जाती हैं। तो **कुल मिलाकर एक गाय का जब कत्ल करें और मांस, हड्डियाँ खून समेत बेचें तो सरकार को या कत्ल करने वाले कसाई को ७००० रुपए से ज्यादा नहीं मिलता।**

फिर राजीव भाई द्वारा कोर्ट के सामने इस संदर्भ में अन्य पक्ष रखा गया कि - गाय को कत्ल न करें तो क्या मिलता है?

तो उसका calculation ये है-

www.thearyasamaj.org

१. एक स्वस्थ गाय एक दिन में १० किलो गोबर देती है और ढाई से ३ लीटर मूत्र देती है। गाय के एक किलो गोबर से ३३ किलो fertilizer (खाद) बनती है जिसे organic खाद कहते हैं तो कोर्ट के जज ने कहा how it is possible?

राजीव भाई द्वारा कहा गया आप हमें समय दीजिये और स्थान दीजिये हम आपको सिद्ध करके बताते हैं। तो कोर्ट ने आज्ञा दी तो राजीव भाई ने उनको पूरा करके दिखाया, और कोर्ट से कहा कि आई.आर.सी. के वैज्ञानिक को बुला लो और टेस्ट करा लो। तो गाय का गोबर कोर्ट ने भेजा, टेस्ट करने के लिए। वैज्ञानिकों ने कहा कि इसमें १८ micronutrient (पोषक तत्व) हैं जो सभी खेत की मिट्टी को चाहिए जैसे मैगनीज, फोस्फोरस, पोटाशियम, कैल्शियम, आयरन, कोबाल्ट, सिलिकोन आदि-आदि। रासायनिक खाद में मुश्किल से तीन होते हैं। तो गाय का खाद रासायनिक खाद से १० गुणा ज्यादा ताकतवर है, तो कोर्ट ने माना। तो १ किलो गोबर है तो ३३ किलो खाद बनता है। और १ किलो खाद का जो अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में भाव है वो ६ रुपए है, तो रोज १० किलो गोबर से ३३० किलो खाद बनेगी। जिसे ६ रुपए किलो के हिसाब से बेचें तो **१८०० से २००० रुपए रोज का गाय के गोबर से मिलता है।**

और गाय के गोबर देने में कोइ sunday नहीं होता weekly off नहीं होता। हर दिन मिलता है। तो साल में कितना? १८०० का ३६५ में गुणा कर लो ! १८००X३६५ = **६७५००० रुपए साल का**। और गाय की समान्य उम्र २० साल है और वो जीवन के अंतिम दिन तक गोबर देती है। तो १८०० गुणा ३६५ गुणा २० कर लो आप। **१ करोड़ से ऊपर तो मिल जाएगा केवल गोबर से**। हजारों लाखों वर्ष पहले हमारे शास्त्रों में लिखा है कि गाय के गोबर में लक्ष्मी जी का वास है। और मैकोले के मानस पुत्र जो आधुनिक शिक्षा से पढ़कर निकले हैं जिन्हें अपना धर्म, संस्कृति, सभ्यता सब पाखण्ड ही लगता है, हमेशा इस बात का मजाक उड़ाते हैं, तो ये उन सबके मुँह पर तमाचा है। क्यूँकि ये बात आज सिद्ध होती है कि गाय के गोबर से खेती कर , अनाज-उत्पादन कर धन कमाया जा सकता है और पूरे भारत का पेट भरा जा सकता है। अब बात करते हैं मूत्र की। रोज का २ सवा दो लीटर। और इससे ओषधियाँ बनती हैं। diabetes, Arthritis, bronchitis, bronchial asthma, tuberculosis, osteomyelitis ऐसे करके **४८ रोगों की ओषधियाँ बनती हैं**। और गाय के एक लीटर मूत्र की बाजार में दवा के रूप में कीमत ५०० रुपए है। वो भी भारत के बाजार में। अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में तो इससे भी ज्यादा है। आपको मालूम है? अमेरिका में गो-मूत्र patent है। और अमरीकी सरकार हर साल भारत से गाय का मूत्र import करती है और उससे कैंसर की medicine बनाते हैं। diabetes की दवा बनाते हैं। और अमेरिका मे गो-मूत्र पर एक दो नहीं तीन patent हैं। अमेरिकन market के हिसाब से calculate करें तो १२०० से १३०० रुपए लीटर बैठता है एक लीटर मूत्र। तो गाय के मूत्र से लगभग रोज की ३००० की आमदनी। और **एक साल का ३००० X ३६५ =१०६५००० रु.**। इतना तो गाय के गोबर और मूत्र से हो गया। और इसी गाय के गोबर से एक गैस निकलती है जिसे मेथेन कहते हैं और मेथेन वही गैस है जिससे आप अपने रसोई घर का सिलेंडर चला सकते हैं और जरूरत पड़ने पर गाड़ी भी चला सकते हैं। ४ पहियों वाली गाड़ी भी। जैसे LPG गैस से गाड़ी चलती है वैसे मेथेन गैस से भी गाड़ी चलती है। तो न्यायधीश महोदय को विश्वास नहीं हुआ। तो राजीव भाई ने कहा आप अगर आज्ञा दो तो आपकी कार में मेथेन गैस का सिलेंडर लगवा देते हैं। आप चला के देख लो। उन्होंने आज्ञा दी और राजीव भाई ने लगवा दिया। और जज साहब ने ३ महीने गाड़ी चलाई। और उन्होंने कहा- its excellent! क्यूँकि खर्चा आता है मात्र ५० से ६० पैसे किलोमीटर और डीजल से आता है ४ रुपए किलोमीटर। मेथेन गैस से गाड़ी चले तो धुआँ बिल्कुल नहीं निकलता। डीजल से चले तो धुआँ ही धुआँ! मेथेन से चलने वाली गाड़ी में शोर बिल्कुल नहीं होता। और डीजल से चले तो इतना शोर होता है कान फट जाएँ। तो ये सब जज साहब की समझ में आया।

तो फिर हमने कहा रोज का १० किलो गोबर इकट्ठा करें तो एक साल मे कितनी मेथेन गैस मिलती है? और २० साल में कितनी

> गुजरात सरकार के सम्पूर्ण गोवंश-वध पर पूर्ण प्रतिबन्ध संबंधी कानून संशोधन को गुजरात उच्च न्यायालय द्वारा अवैध करार दिए जाने के पश्चात् गुजरात सरकार माननीय उच्चतम न्यायालय में गई। जहाँ मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री लाहोटी के नेतृत्व में सात सदस्यीय संविधान पीठ में इस अपील पर विचार किया गया। उल्लेखनीय है कि जब यह मुकद्दमा गुजरात हाईकोर्ट में चल रहा था तो **'आर्य प्रतिनिधि सभा, गुजरात'** भी उसमें एक पक्ष थी। महर्षि दयानन्द सरस्वती ऐसे प्रथम महापुरुष थे जिन्होंने गौ-रक्षा के धार्मिक पक्ष से हटकर गौ-वंश की महत्ता के आर्थिक पक्ष को रेखांकित करते हुए गोकरुणानिधि व सत्यार्थप्रकाश में उल्लिखित किया कि गाय की एक पीढ़ी से ३६६७६० व्यक्ति भोजन की समस्या से मुक्त होते हैं तथा कृषि का आधार ही गौ-वंश है। लगभग ११० वर्ष बाद संदर्भित मुकद्दमे में माननीय उच्चतम न्यायालय में यही आर्थिक पक्ष विस्तृत वैज्ञानिक शोध निष्कर्षों द्वारा सम्पुष्ट किया गया। हम कहना चाहेंगे कि दयानन्द का नाम इस ऐतिहासिक मुकद्दमे में चाहें न हो पर यह पूरी तरह ऋषि-विचारों की छाया में था। श्री राजीव दीक्षित ने एक एन.जी.ओ. के रूप में इसमें भाग लिया। प्रस्तुत आलेख में जो तर्क दिए हैं यथावत् निर्णय में उल्लिखित न भी हों पर इनमें से अनेक की चर्चा 'जजमेण्ट' में की गई है। वहाँ माननीय न्यायाधीश ने यह भी लिखा है कि एन.जी.ओ. ने भी अपने तर्क प्रस्तुत किए जिनका विशेष उल्लेख करना इसलिए आवश्यक नहीं है कि गुजरात सरकार ने लगभग उन्हीं तर्कों को प्रस्तुत किया है। यह निर्णय ऐतिहासिक है परिणिति भी ऐतिहासिक होनी चाहिए। **-अशोक आर्य**

मिलेगी और भारत मे १७ करोड़ गाय हैं सबका गोबर एक साथ इकट्ठा करें और उसका ही इस्तेमाल करें तो **१ लाख ३२ हजार करोड़ की बचत इस देश को होती है।** बिना डीजल, बिना पेट्रोल के हम पूरा ट्रांसपोर्टेशन इससे चला सकते हैं। अरब देशों से भीख माँगने की जरूरत नहीं और पेट्रोल-डीजल के लिए अमेरिका से डालर खरीदने की जरूरत नहीं। अपना रुपया भी मजबूत। इस प्रकार गौवंश के आर्थिक आधार को सिद्ध किया गया। माननीय न्यायालय का रुख देखते हुए कसाइयों ने अपना ट्रम्प कार्ड फैंका कि गाय का कत्ल करना हमारा धार्मिक अधिकार है (this is our religious right)। तो राजीव भाई ने कोर्ट में कहा- अगर ये इनका धार्मिक अधिकार है तो इतिहास में पता करो कि किस -किस मुस्लिम राजा ने अपने इस धार्मिक अधिकार का प्रयोग किया? तो पुराने दस्तावेज जब निकाले गए तो उससे पता चला कि भारत में जितने भी मुस्लिम राजा हुए एक ने भी गाय का कत्ल नहीं किया। इसके उल्टा कुछ राजाओं ने गायों के कत्ल के खिलाफ कानून बनाए। उनमें से एक का नाम था बाबर। बाबर ने अपनी पुस्तक बाबरनामा में लिखवाया है कि मेरे मरने के बाद भी गाय का कत्ल न करने का कानून जारी रहना चाहिए, तो उसके पुत्र हुमायूँ ने भी उसका पालन किया और उसके बाद जितने मुगल राजा हुए सबने इस कानून का पालन किया including औरंगजेब। फिर दक्षिण भारत मे एक राजा था हैदर अली। टीपू सुल्तान का बाप। उसने एक कानून बनवाया था कि अगर कोई गाय की हत्या करेगा तो हैदर उसकी गर्दन काट देगा और हैदर अली ने ऐसे सैकड़ों कसाइयों की गर्दन काटी थी। फिर हैदर अली का बेटा आया टीपू सुल्तान। टीपू सुलतान के समय में कोई भी अगर गाय काटता था तो उसका हाथ काट दिया जाता था। राजीव भाई ने कोर्ट से कहा कि आप हमें आज्ञा दें तो हम ये कुरानशरीफ, हदीस आदि जितनी भी पुस्तकें हैं, कोर्ट मे पेश करते हैं और कहाँ लिखा है गाय का कत्ल करो ये जानना चाहते हैं। और आपको पता चलेगा कि इस्लाम की किसी भी धार्मिक पुस्तक में नहीं लिखा है कि गाय का कत्ल करो। हदीस में तो लिखा हुआ है कि गाय की रक्षा करो क्यूँकि वो तुम्हारी रक्षा करती है। पैगंबर मुहम्मद साहब का statement है कि गाय अबोल जानवर है इसलिए उस पर दया करो। और एक जगह लिखा है गाय का कत्ल करोगे तो दोज़ख मे भी जमीन नहीं मिलेगी। तो राजीव भाई ने कोर्ट से कहा अगर कुरान ये कहती है, मुहम्मद साहब ये कहते हैं, हदीस ये कहती है तो फिर गाय का कत्ल कर धार्मिक अधिकार कब से हुआ? अंततः कोर्ट ने उनको १ महीने का पर्मीशन दिया कि जाओ और दस्तावेज ढूँढ के लाओ जिसमें लिखा हो, गाय का कत्ल करना इस्लाम का मूल अधिकार है, हम मान लेंगे। और एक महीने तक भी कोई दस्तावेज नहीं मिला तो कोर्ट ने कहा अब हम ज्यादा समय नहीं दे सकते।

और अंततः २६ अक्तूबर २००५ को judgement आ गया,

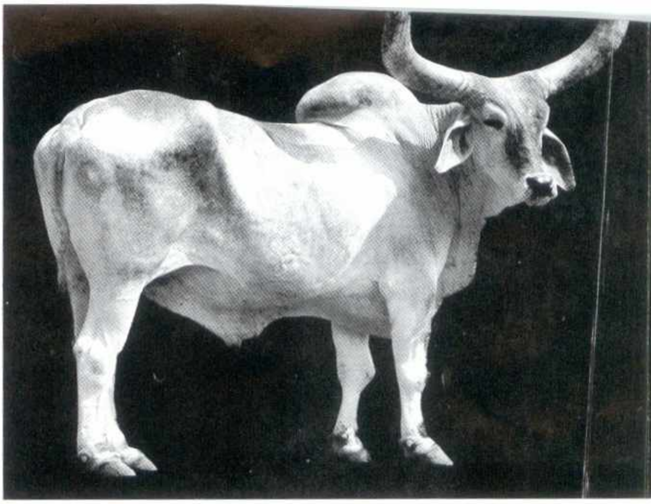

और आप चाहें तो judgement की copy- supremecourtcaselaw.com पर जाकर download कर सकते हैं। ये ६६ पन्ने का judgement है। सुप्रीम कोर्ट ने एक इतिहास बना दिया और उन्होंने कहा कि गाय को काटना संवैधानिक पाप है धार्मिक पाप है। और सुप्रीम कोर्ट ने कहा गौ-रक्षा करना, संवर्द्धन करना देश के प्रत्येक नागरिक का संवैधानिक कर्त्तव्य है। सरकार का तो है ही, नागरिकों का भी संवैधानिक कर्त्तव्य है। अब तक जो संवैधानिक कर्त्तव्य थे जैसे- संविधान का पालन करना, राष्ट्रीय ध्वज का सम्मान करना, क्रांतिकारियों का सम्मान करना, देश की एकता-अखण्डता को बनाए रखना आदि-आदि अब इसमें गौ की रक्षा करना भी जुड़ गया है।

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि भारत के ३४ राज्यों की सरकार की जिम्मेदारी है कि वो गाय का कत्ल अपने-अपने राज्य में बंद कराये और किसी राज्य में गाय का कत्ल होता है तो उस राज्य के मुख्यमंत्री की जिम्मेदारी है। राज्यपाल की जबाबदारी, चीफ सेकेट्री की जिम्मेदारी है, वो अपना काम पूरा नहीं कर रहे हैं तो ये राज्यों के लिए संवैधानिक जबाबदारी है और नागरिकों के लिए संवैधानिक कर्त्तव्य है।

अब कानून दो स्तर पर बनाये जाते हैं एक जो केन्द्र सरकार बना सकती है और एक ३४ राज्यों की राज्य सरकार बना सकती हैं अपने-अपने राज्यों में। अगर केन्द्र सरकार ही बना दे तो किसी राज्य सरकार को बनाने की जरूरत नहीं। केन्द्र सरकार का कानून पूरे देश मे लागू होगा। तो आप सब केन्द्र सरकार पर दबाव बनायें। जब तक केन्द्र सरकार नहीं बनाती तब तक आप अपने-अपने राज्य की सरकारों पर दबाव बनायें। **दबाव कैसे बनाना है-**

आपको हजारों, लाखों की संख्या में प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति या राज्य के मुख्यमंत्री को पत्र लिखना है और इतना ही कहना है कि २६ अक्टूबर २००५ को जो सुप्रीम कोर्ट का judgment आया है उसे लागू करो।

- अन्तर्जाल लेख

❑❑❑

इण्डिया को भारत बनाने का प्रयास

पं. उमाकान्त उपाध्याय

स्वतंत्रता प्राप्ति के समय संविधान के निर्माण में 'इंडिया दैट इज भारत' लिखा गया। यह भाषा के मुहावरे के कारण था या राजनीतिक चतुराई, यह कहना कठिन है, किन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के ६०-६५ वर्षों के इतिहास में भारत का 'इंडियाकरण' बड़ी तीव्रता से, और लगता है, कि बड़ी सूझबूझ से होता जा रहा है। इंडिया नाम यूरोप वालों ने दिया और यूरोप के सभी उपनिवेशवादी देशों का यह प्रयास रहा है कि भारत को वास्तव में इंडिया बना दें। भारतवर्ष में अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार का उत्तरदायित्व लार्ड मैकाले को दिया गया था। उसने बहुत स्पष्टरूप से यह घोषणा की थी कि हमारी शिक्षा नीति का परिणाम यह होगा कि भारतवर्ष के लोग रंग-रूप में तो भारतीय रहेंगे किन्तु उनका चिन्तन, मनन, अभिरुचि, सब कुछ इंगलिश हो जाएगी। लार्ड मैकाले ने अपनी योजना को बड़ी सफलता से चालू किया और भारत के सीधे साधे लोगों का इंडियाकरण होने लगा। कम से कम भारतवर्ष का प्रबुद्ध वर्ग और कई राजनीतिक नेता इस योजना के शिकार हो गए।

भारतवर्ष भौगोलिक रूप से सिकुड़ता जा रहा है। एक समय था जब पख्तनिस्तान 'शालातूर' व्याकरण के प्रसिद्धतम आचार्य पाणिनी की जन्मभूमि था और तक्षशिला भारतवर्ष का

प्रसिद्ध विश्वविद्यालय था। गौरीशंकर, मानसरोवर भारतवर्ष का प्रसिद्ध तीर्थस्थल था। किन्तु आज का भारत भूगोल की दृष्टि से बहुत सिकुड़ गया है। आज सिन्ध, मुल्तान, लाहौर, ढाका, चटगाँव, ये सब भारत से बाहर हो गए हैं।

इंडियाकरण की एक झाँकी- २०११ ई. की जनगणना के अनुसार भारतवर्ष की जनसंख्या १.२१ करोड़ है। इतनी बड़ी आबादी में केवल २.५ लोगों की प्रथम भाषा अंग्रेजी है और ६ करोड़ लोगों की द्वितीय भाषा अंग्रेजी है। यही थोड़े से लोग भारत के शासन पर हावी हैं। भारत में केवल चार उच्च न्यायालयों में अंग्रेजी के अतिरिक्त हिन्दी में भी कार्य करने की अनुमति है। ये उच्च न्यायालय उत्तरप्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश और राजस्थान के हैं। देश के अन्य १७ उच्च्य न्यायालयों में किसी भी भारतीय भाषा में कार्य करने की अनुमति नहीं है। भारत के उच्चतम न्यायालय में भी केवल अंग्रेजी में कार्य करने की अनुमति है। देश के २-३ प्रतिशत अंग्रेजी जानने वालों को सर्वोच्च्य न्यायालय और उच्च्य न्यायालय में कार्य करने की सुविधा होना जनतंत्र का हनन और अंग्रेजीकरण का प्रचण्ड प्रमाण है। देश की ६७-६८ प्रतिशत जनता अपनी बात वकीलों के माध्यम से कहती है और न्यायाधीश जनता की भाषा में निर्णय नहीं देते हैं।

भारत बनाने का प्रयासः-

भारत को एक राष्ट्र में आबद्ध करने के लिए भारत के प्राचीन इतिहास को जनमानस तक पहुँचाने का प्रयास बहुत आवश्यक है। भारत का इतिहास वेदों से आरम्भ करके रामायण, महाभारत काल से होता हुआ बौद्ध, जैन, शैव, वैष्णव, शाक्त, भक्तिमार्ग आदि अनेक धाराओं में होता हुआ कालिदास, भवभूति, माघ, दण्डी आदि साहित्यकारों और गौतम, कपिल, कणाद, पतंजलि और व्यास आदि ऋषियों की चिन्तनधारा को लेता हुआ शंकराचार्य, रामानुचार्य, माध्वाचार्य, गौतमबुद्ध, महावीर स्वामी आदि को अपने में समेटे हुए है। इसी प्रकार उत्तर में कैलाश मानसरोवर, गंगोत्री, बद्रीनाथ, दक्षिण में रामेश्वरम्, पश्चिम में सोमनाथ और पूर्व में गंगासागर सबको अपने में समेट कर भारतीय जनमानस को एक श्रेष्ठतम विरासत देता है। आज तक इतिहास में अधिक बल राजाओं के युद्धों और थोड़ा बहुत शासन व्यवस्था पर लिखा जाता रहा है। यह समग्र इतिहास नहीं है। विद्यार्थियों को माध्यमिक कक्षाओं में सांस्कृतिक और साहित्यिक आदि उपलब्धियों से परिचित कराना उपयोगी है। हम इंग्लैण्ड या विश्व का इतिहास थोड़ा पढ़ावें किन्तु कक्षा ५

www.thearyasamaj.org

से लेकर १० तक अपने देश के इतिहास के विभिन्न पक्षों की उत्साहवर्द्धक जानकारी अवश्य पढ़ावें जिससे हमारे सम्पूर्ण राष्ट्र को भावनात्मक एकता तथा राष्ट्रीय स्वाभिमान का बोध होगा।

यह सर्वथा सत्य है कि देश का प्रत्येक वर्ग इन सभी ऐतिहासिक धाराओं से सहमत न होगा। विभिन्न वर्गों की अभिरुचि भिन्न-भिन्न तथा संकुचित होगी। उदाहरण के लिए बौद्ध या जैन, शैव या शाक्त विचारधाराओं को पसन्द नहीं करेंगे। एक सम्प्रदाय का अन्य सभी सम्प्रदायों से मतभेद होना स्वाभाविक ही है। सदाचार के प्रचारकों को स्थापत्य के 'रतिचित्रों' से घृणा, वितृष्णा होगी। किन्तु बहुसम्प्रदाय वाले राष्ट्र के नागरिकों को अन्य सम्प्रदाय वालों के विचारों, मन्तव्यों को स्वतंत्रता देना राष्ट्रीय कर्तव्य है। अतः हम किसी भी सम्प्रदाय को मानते हों, हमारा यह राष्ट्रीय दायित्व है कि हम दूसरे सम्प्रदायों के विचारों का सम्मान करें।

एक सलाह अल्पसंख्यक के लिए- हमारे देश में मुसलमान और ईसाई प्रमुख अल्पसंख्यक हैं। इनमें भी मुसलमान की संख्या लगभग २.० प्रतिशत तक जाती है और दोनों मजहबों के पीछे बलवान, प्रभावशाली विदेशी राष्ट्र हैं इससे भी बड़ा राष्ट्रीय रूप से खतरा यह है कि हमारी सभी सरकारें और केन्द्रीय सरकार भी इन्हें अपना वोट बैंक बना रही हैं। इन मजहबों के चतुर नेताओं को निहित स्वार्थों को सिद्ध करने का अवसर मिल रहा है किन्तु अल्पसंख्यक समुदाय को गंभीरता से विचार करना चाहिए कि सभी अल्पसंख्यक, मुसलमान, ईसाई, अनुसूचित जातियाँ, अनुसूचित जनजातियाँ सभी अतिरिक्त सुविधाओं की बैशाखी के सहारे अपनी बहुमुखी उन्नति नहीं कर सकेंगे। यहाँ एक उदाहरण प्रासंगिक है। इण्डोनेशिया के राष्ट्रपति सुकर्णो ने नेहरू जी को राष्ट्रीय अतिथि के रूप में आमंत्रित किया था। नेहरू जी के सम्मान में श्री सुकर्णो ने एक सांस्कृतिक कार्यक्रम रखा। इस कार्यक्रम में रामलीला का बड़ा प्रभावशाली मंचन हुआ था।

श्री नेहरू जी ने बड़ी प्रसन्नता एवं आश्चर्य से डॉ. सुकर्णो से पूछा- 'राष्ट्रपति जी इण्डोनेशिया तो इस्लामी राष्ट्र है ,किन्तु आपने रामलीला का मंचन कैसे कराया, यह तो हिन्दुओं का इतिहास है।' राष्ट्रपति सुकर्णो ने नेहरू जी को उत्तर दिया- 'प्रधानमंत्री जी हमारे बुजर्गों ने न जाने किन परिस्थितियों में, किन विपदाओं में कैसे मजहब बदल लिया, किन्तु हमने अपने पूर्वज और अपना इतिहास नहीं बदला है, हमें इससे लगाव है, हम इसे प्यार करते हैं। रामायण का हमारे देश में बहुत बड़ा सम्मान है।

सभी अल्पसंख्यकों को डॉ. सुकर्णो की यह बात विचारने योग्य है। इसी प्रकार एक बार सीमान्त प्रदेश के सीमान्त गाँधी के छोटे भाई बादशाह खाँ का अभिनन्दन हुआ था। अपने अभिनन्दन के उत्तर में उन्होंने कहा था- 'आप मुझे विदेशी क्यों मान रहे हैं? मैं तो आपके आचार्य पाणिनि के राजस्थान 'शालातूर' के पास का हूँ । मैं तो अपने को प्रथम आर्य मानता हूँ, फिर पठान हूँ और फिर मुसलमान हूँ। **यह वास्तविक सच्चाई है कि मजहब तो विचारों के कारण, लोभ, लालच के कारण, भय के कारण, छल प्रपंच किसी भी कारण से बदल जाता है।** किन्तु भूगोल, इतिहास, बुजुर्ग और राष्ट्रीय उपलब्धियाँ नहीं बदलतीं। रूस के कम्युनिस्ट टाल्सटॉय का सम्मान करते हैं, चीन के कम्युनिस्ट कन्फ्यूसियस का सम्मान करते हैं तो व्यास, वाल्मीकि, कालिदास आदि भारतवासियों के लिए भी सम्मान और आत्मीयता के पात्र हैं, चाहे सम्प्रदाय या मजहब कोई भी हो। हमारे देश के भी सभी अल्पसंख्यक अरब या जैरूसलम से नहीं आये हैं। एकाध प्रतिशत को छोड़कर सभी भारत की सन्तान हैं और यहाँ शत-प्रतिशत ही सबका इतिहास है।

भारत बनाने के लिए संस्कृत की महत्ताः- संस्कृत भाषा भारतवर्ष के लाखों वर्ष पुराने बहुमुखी इतिहास की संवाहक है। सारा यूरोप, जर्मनी, इंग्लैण्ड, फ्रांस सभी देशों के भाषाशास्त्री संस्कृत की महिमा पर मुग्ध हैं। प्रसिद्ध विद्वान् सर विलियम जॉन ने कहा था- '**संस्कृत भाषा की पद रचना अत्यधिक अद्भुत है। यह भाषा ग्रीक से भी पूर्ण लैटिन से अधिक समृद्ध तथा दोनों से अधिक परिष्कृत है।**' सारा संसार स्वीकार करता है कि हजारों वर्ष पूर्व का विज्ञान, गणित, भूगोल, खगोल, नक्षत्र विद्या आदि संस्कृत भाषा में निहित है। स्वतंत्र भारत में बड़ी निर्दयता से संस्कृत की उपेक्षा हुई है। विदेशी राज्य के समय माध्यमिक कक्षाओं के लगभग ८० प्रतिशत विद्यार्थी संस्कृत पढ़ते थे और रामायण, गीता, महाभारत आदि उत्कृष्ट ऐतिहासिक धरोहर से उनका परिचय हो जाता था। संस्कृत हमारी उत्कृष्टतम विरासत है। पंडित जवाहरलाल नेहरू लिखते हैं- 'यदि कोई मुझसे पूछे कि भारत के पास सबसे बड़ा खजाना और सर्वोत्तम धरोहर क्या है तो मैं बिना किसी हिचकिचाहट के कहूँगा कि संस्कृत भाषा और साहित्य तथा वह सब कुछ जो इसमें समाहित है। यह एक शानदार विरासत है और जब तक हमारे जीवन पर इसका प्रभाव कायम है तब तक भारत की यह श्रेष्ठता कायम रहेगी।' महात्मा गाँधी ने भी कहा-'संस्कृत एक ऐसी भाषा है जिसमें भारतीय संस्कृति का चिरंतन ज्ञान भरा है। बिना संस्कृत पढ़े कोई पूर्ण भारतीय नहीं बन सकता।' इंडिया को भारत बनाने

www.thearyasamaj.org

का एकसूत्री उपाय है कि ५-७ प्रतिशत अंग्रेजी जानने वालों के वर्चस्व से भारत का राजतंत्र मुक्त हो। ये ५-७ प्रतिशत लोग देश की राजनीति केन्द्र और प्रान्तों में अधिकार किए बैठे हैं। इन्हीं के साथ आई.सी.एस. और पी.सी.एस. के अफसरान तथा अंग्रेजी मीडिया का निहित स्वार्थ समाया हुआ है। लार्ड मैकाले के इन मानसिक उत्तराधिकारियों से देश की शासन व्यवस्था को मुक्त कराकर हिन्दी और अन्य देशी भाषाओं के जानने वाले मातृभूमि के वास्तविक उत्तराधिकारियों के वर्चस्व को प्रतिष्ठित करने से इंडिया को भारत बनाने में सफलता मिलेगी।

ईशावास्यम्

पी-३०, कालिन्दी हाउसिंग स्कीम-कोलकाता-७०००८६

❑❑❑

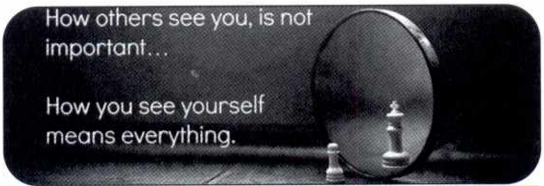

वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्य में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

स्मरण नमन

वासुदेव बलवन्त फड़के

जन्म-४ नव. १८४५

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में प्रायः वासुदेव बलवन्त फड़के को सशस्त्र संघर्ष का पिता कहा जाता है। फड़के का कहना था कि उनकी बीमारी का एकमात्र इलाज स्वराज्य है। १८५७ में जो प्रयास भारतीय सैनिकों ने किया। भारतीय अस्मिता को बचाने के लिए तीन तीन युद्धों को लड़कर जो प्रयास मराठों ने किया और १८४० में सिख बन्धुओं ने किया। वह असफल रहा। उसी का अनुसरण एक व्यक्ति फड़के ने शक्तिशाली ब्रिटिश शासन की चूलें हिलाने के लिए किया। भारत से ब्रिटिश शासन को हटाने के लिए सशस्त्र विद्रोह फड़के ने किया। वासुदेव को बचपन से ही कुश्ती और घुड़सवारी का बहुत शौक था। उन्होंने पूणे में १५ साल तक मिलिट्री के लेखा विभाग में एक क्लर्क की नौकरी की। लाहूजी ने उनको स्वतंत्रता का महत्व समझाया। लाहूजी जो स्वयं भी एक दलित वर्ग के थे उन्होंने वासुदेव को दलितों को स्वतंत्रता संग्राम की मुख्यधारा में लाने का महत्व समझाया। वासुदेव ने महादेव गोविन्द रानाडे के अनेक भाषण सुने जिनमें मुख्यतः बताया जाता था कि ब्रिटिश राज्य में किस प्रकार भारतीय अर्थव्यवस्था को तहस नहस किया जा रहा है और जिसकी वजह से भारतीय समाज को अनेक दुःख सहने पड़ रहे हैं। वासुदेव फड़के ने एक्यवर्द्धनी सभा के नाम से एक संस्था की स्थापना की। वासुदेव जब नौकरी करते थे तो उनके अवकाश स्वीकृति में देर होने के कारण वे अपनी मरती हुई माँ के अंतिम दर्शन नहीं कर पाये। संभवतः यह घटना वासुदेव को अंदर तक कचोट गई और उनके जीवन का टर्निंग प्वाइन्ट साबित हुई। १८६० में फड़के लक्ष्मण नरहरि इन्द्रपुरकर और बामन प्रभाकर भावे ने 'पूणे नेटिव इंस्टिट्यूशन' की स्थापना की जो बाद में 'महाराष्ट्र एजूकेशन सोसायटी' के नाम से जाना जाने लगा। १८७५ में बड़ौदा के शासक गायकवाड़ को अंग्रजों ने त्रस्त किया तो फड़के ने इसके विरुद्ध आवाज उठाई। वासुदेव फड़के ने विशेष रूप से रामोशी, कोली, भील और धंगार जैसी दलित व जनजातियों को स्वतंत्रता के लिए संगठित किया। उन्होंने तीन सौ आदमियों का एक संगठन बनाया जिसका उद्देश्य भारत को ब्रिटिश राज से छुटकारा दिलाना था। वस्तुतः वासुदेव इस निमित्त एक सेना बनाना चाहते थे। परन्तु अर्थ की कमी की वजह से उन्होंने सरकारी खजाने को लूटने की योजना बनाई। इस क्रम में पूणे जिले के सिरपुर तालुकान्तर्गत धामरी गाँव में उन्होंने पहला हमला बोला। ब्रिटिश सरकार द्वारा जो आयकर एकत्रित किया जाता था वह वहाँ के एक स्थानीय व्यापारी बालचन्द फौजमल सांखला के यहाँ रखा जाता था। वासुदेव ने इनके घर पर धावा बोला और सूखे की चपेट में आये ग्रामीणों की सहायता के लिए उस धन को लूट लिया। इस लूट में उन्होंने करीब चार सौ रु. लूटे। परन्तु इस वारदात से उनके ऊपर डकैत होने का ठप्पा लग गया। इस घटना के बाद अपने को बचाने के लिए वासुदेव गाँव-गाँव बचते फिरते रहे और उनके दलित साथियों का उसमें सहयोग रहा। नानाघूम ने उनको स्थानीय जंगल में शरण दी। यहाँ वो सुरक्षित रहे। ब्रिटिश खजाने को लूटते रहे और सूखाग्रस्त किसानों की सहायता करते रहे। १० मई १८७९ की रात को उन्होंने पलासपी और चिखाली पर धावा बोल १.५० लाख रु. लूटा। लौटते में मेजर डेनियल ने उनके एक साथी नायक को गोली मार दी। इससे वासुदेव के मिशन को बहुत धक्का लगा और वे श्रीशैला मल्लिकार्जुन के मंदिर में चले गए। इसके बाद वासुदेव ने करीब पाँच सौ रोहिल्ला साथियों को तैयार किया। इस बीच ब्रिटिश सरकार ने इन्हें पकड़वाने के लिए पुरस्कार की घोषणा की। इसके प्रत्युत्तर में इन्होंने बोम्बे के गर्वनर को पकड़ने के लिए पुरस्कार की घोषणा कर दी। अधिक समर्थन प्राप्त करने के लिए ये निजाम के क्षेत्र में भी गए जहाँ बीजापुर में २० जुलाई १८७९ में इनको पकड़ लिया गया। इनके खिलाफ गवाही में इनकी अपनी डायरी व आत्मकथा सबूत के रूप में प्रस्तुत की गई। सजा के तौर पर इनको उम्रभर के लिए अण्डमान भेज दिया गया। १७ फरवरी १८८३ को अदन की जेल में इनकी मृत्यु हो गई। इस प्रकार वासुदेव बलवन्त फड़के पूरी जिन्दगी ब्रिटिश राज के विरुद्ध संघर्ष करते रहे यद्यपि इनको सीमित सफलता ही मिल पाई परन्तु इनके दृढ़ निश्चय, संगठन व परोपकार की भावना व स्वतंत्रता प्राप्ति की लालसा इतिहास के पन्नों में सदा के लिए दर्ज है। भारतीय डाक व तार विभाग ने इनके सम्मान में २१.२.१९८४ को एक डाक टिकट भी निकाला।

संकलनकर्ता - पं. नवनीत आर्य, नवलखा महल, उदयपुर

www.thearyasamaj.org

समाचार

प्रभात की प्रभा

आर्य जगत् के लिए गौरव की बात है कि पाणिनि महाविद्यालय रेवली द्वारा आयोजित व्याकरण शास्त्र प्रतियोगिता में अष्टाध्यायी प्रथमावृत्ति प्रतियोगिता (उत्तरार्द्ध) में प्रभात आश्रम के ब्रह्मचारी शुभम ने सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया। ध्यान रहे गत वर्ष की अष्टाध्यायी पूर्वार्द्ध प्रथमा वृत्ति की परीक्षा में भी ब्र. शुभम् ही सर्वप्रथम था। इस वर्ष उस्मानिया विश्वविद्यालय (हैदराबाद) की एम. ए. परीक्षा में प्रभात आश्रम के छात्र ब्र. सतीश ने ८६% अंक लेकर सर्वप्रथम स्थान प्राप्त कर स्वर्ण पदक अपने नाम कर लिया, तथा ब्र. वरुण विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित परीक्षा उत्तीर्ण कर छात्रवृत्ति के अधिकारी बने। क्रीड़ा के क्षेत्र में भी आश्रम की प्रतिभाओं का वर्चस्व स्थापित हुआ। जुलाई २०१२ में २ से १२ तक जर्मनी में विश्व खेल प्रतियोगिता में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए ब्र. कपिल, ब्र. प्रियंक, ब्र. मंगल ने धनुर्विद्या (तीरन्दाजी) के दलीय एवं व्यक्तिगत दोनों स्वर्ण पदक जीत कर भारत को गौरवान्वित किया। प्रभात आश्रम में इनके सम्मान में आयोजित सभा में इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की गई।

–आचार्य गुरुकुल प्रभात आश्रम, भोलाझालम्, टीकरी, मेरठ

विदेश में पहली बार १०८ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ

वैदिक विद्वान् आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में विदेश में पहली बार १०८ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का भव्य आयोजन हुआ। यह आयोजन

कनाडा के आर्यसमाज मारखम, टोरंटो के विशाल प्रांगण में बड़ी श्रद्धा के साथ सम्पन्न हुआ। भारी संख्या में उपस्थित श्रोताओं ने जहाँ गायत्री के महत्व को समझा वहीं यज्ञ की महिमा को भी आत्मसात किया। अध्यात्म पथ के यशस्वी संपादक एवं प्रख्यात लेखक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने विशाल जन-समुदाय को प्रभावपूर्ण शैली में सम्बोधित करते हुए कहा कि यज्ञ से पर्यावरण की शुद्धि, सभी शुभकामनाओं की पूर्ति, दान, संगतिकरण और देव पूजा से प्रकृति, ईश्वर से निकटता, सद् विचारों में वृद्धि और अंततः मोक्ष की प्राप्ति होती है। यज्ञ के मुख्य यजमान श्री भास्कर पटनी एवं श्रीमती लता पटनी थे। समाज के प्रधान श्री सुदर्शन बेरी ने आचार्य श्री चन्द्रशेखर शास्त्री जी का सम्मान कर उनका धन्यवाद किया। सप्तदिवसीय इस गायत्री महायज्ञ को सफल बनाने में सर्व श्री सतपाल चोपड़ा, ओम शर्मा, प्रीतेश, रूपल, रेशमा, दिलीप, चाँदनी आदि एवं वैदिक कल्चर सेंटर के सभी सदस्यों का विशेष योगदान रहा।

- डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया(साहित्य सम्पादक- अध्यात्म पथ)

ऑन लाइन टेस्ट सीजन २ की विजेता श्रवणी देवी के उद्‌गार

उपरोक्त विषय में आप श्रीमान् जी से सादर लेख है कि मुझे आप द्वारा प्रेषित ५१००रु. की ईनामी राशि का चैक एवं प्रशस्ति पत्र प्राप्त हो गया है साथ ही मुझे यह उम्मीद भी नहीं थी की यह पुरस्कार मैं प्राप्त करूँगी। पर मैंने जब संस्कृति संबंधी परीक्षा का नाम सुना तो मुझसे रहा नहीं गया और परीक्षा देने बैठ गई। **न्यास द्वारा आयोजित संस्कृति के उन्नयन हेतु बहुत ही अच्छा कदम है और भारतीय संस्कृति प्रेमियों के लिए यह स्वर्णिम अवसर है ताकि अपने संस्कार और संस्कृति का ज्ञान बढ़ा सकें।** मेरे अनुसार तो यह संस्कृति परीक्षा प्रत्येक गाँव में होवे तो वर्तमान में युवा पीढ़ी जो पाश्चात्य व छलावा संस्कारनाशक संस्कृति की ओर आकर्षित हो रही है तो प्रतियोगिता के माध्यम से रोका जा सकता है और भारतीय संस्कृति की मान मर्यादा को वापस लाया जा सकता है। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद एवं आभार।

- श्रवणी देवी, भीलवाड़ा-राजस्थान

सरल आध्यात्मिक शिविर का आयोजन

दिनांक २८ अक्टूबर से १ नवम्बर २०१३ तक गुरुकुल भैयापुर, लाढ़ोत, रोहतक में स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक के निर्देशन में आयोजित है। शिविर का उद्‌घाटन दिनांक २८ अक्टूबर प्रातः ६.०० बजे पूज्य आचार्य बलदेव जी के द्वारा होगा। आवेदन करने की अंतिम तिथि २० अक्टूबर २०१३, शुल्क ५००.०० रु.। **संपर्क ०६३५४२५३६६५,०६४६६००८१२०**

डॉ पवित्रा बनीं मुख्य अधिष्ठात्री

ऐतिहासिक कन्या गुरुकुल सासनी की मुख्य अधिष्ठात्री आचार्या कमला स्नातिका ने अस्वस्थ होने के कारण अपने स्थान पर डॉ. पवित्रा वेदालंकार को गुरुकुल की मुख्याधिष्ठात्री चयनित किया है।

सुमन कुमार वैदिक सासनी (अलीगढ़)

हरियाणा संस्कृत अकादमी द्वारा राष्ट्रीय वेद संगोष्ठी

वेद रक्षा प्रतिष्ठान तथा आर्य समाज,सेक्टर ९ पंचकूला के सहयोग से उक्त संगोष्ठी का आयोजन ६ अक्टूबर २०१३ को किया गया जिसमें डॉ.श्रीधर वशिष्ठ(पूर्व कुलपति लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ) दिल्ली एवं अध्यक्ष प्रो.डॉ.सोमदेव शतान्शु थे। विशिष्ठ अतिथि के रूप में जयपुर के श्री सत्यव्रत सामवेदी ने भाग लिया।

-प्रो.सुभाष वेदालंकार

आर्य समाज, मानटाउन सवाई माधोपुर, राजस्थान के निर्वाचन सम्पन्न

संरक्षक श्री सरस्वती प्रसाद गोयल, प्रधान डॉ.आर.पी. गुप्ता, मंत्री श्री रामजी लाल आर्य, कोषाध्यक्ष श्री सोमेश माहेश्वरी

महिला आर्य समाज, सवाई माधोपुर

प्रधान-श्रीमती मनोहर देवी गुप्ता, मंत्री श्रीमती अनिता माहेश्वरी , कोषाध्यक्ष श्रीमती नीलम माहेश्वरी

सभी पदाधिकारियों को सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

चतुर्वेद शतकम यज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज मानसरोवर, जयपुर के १९वें स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर दिनांक ६ अक्टूबर १३ को डॉ. कृष्णपाल सिंह के ब्रह्मत्व में यह यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आचार्य उषर्बुद्ध, डॉ. रामपाल विद्यासागर, पं. वासुदेव शास्त्री, डॉ. मुरारी लाल पारीक, श्री यशपाल यश व श्री एम. एल. गोयल के प्रेरणास्पद उद्‌बोधन हुए। पं. सत्यपाल सरल, देहरादून ने अपने भजनों का माधुर्य बिखेरा। कार्यक्रम की सफलता के केन्द्र में आर्यसमाज के प्रधान श्री अर्जुन कालरा तथा महिला आर्यसमाज की प्रधाना श्रीमती सरोज कालरा का उद्योग रहा।

- ईश्वर दयाल माथुर, प्रवक्ता

आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय के प्रवचनों ने किया मंत्रमुग्ध

पूज्य स्वामी डॉ. दिव्यानन्द सरस्वती के नेतृत्व में दिनांक १४ से २० अक्टूबर २०१३ तक श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल महाविद्यालय, करतारपुर का ४३वाँ वार्षिकोत्सव सोत्साह सम्पन्न हुआ। आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय के ब्रह्मत्व में सामवेद परायण यज्ञ तथा 'भारतीय संस्कृति के समुत्थान में गुरुकुलों की भूमिका', महिला सम्मेलन एवं राष्ट्रीय चरित्र निर्माण सम्मेलन प्रभावशाली रहे। कार्यक्रम में डॉ. (स्वामी) दिव्यानन्द सरस्वती, प्रि. अश्विनी कुमार शर्मा आदि विद्वानों ने अपने उद्‌बोधन प्रदान किए।

- सुखदेव राज, अधिष्ठाता

गाय की कुर्बानी न दें- देवबंद

सहारनपुर की इस्लामिक शिक्षण संस्था दारूल उलूम देवबंद ने सभी मुसलमानों से अपील की है कि वे ईद-उल-जुहा के मौके पर गाय की कुर्बानी न करें। देवबंद ने कहा कि वे कानून और हिन्दुओं की भावनाओं का ख्याल रखते हुए ऐसा न करें।

साभार- दैनिक भास्कर

www.thearyasamaj.org

हलचल

अस्वाभाविक, पर अद्भुत मित्रता

मेंढ़क ने एक चूहे को डूबने से बचाया। लखनऊ में एक छोटे से तालाब में एक चूहा कूड़े के ढेर में फँस गया। मेंढ़क ने चूहे को अपनी पीठ पर चढ़ाकर तालाब के पार कर दिया। इससे यह विदित होता है कि पशुओं में भी परोपकार की भावना होती है।

फोटोग्राफर आजम ने अविस्मरणीय क्षण को अपने कैमरे में कैद कर लिया।

अद्भुत स्मरणक्षमता का धनी कौटिल्य (मैमोरी प्रिंस)

करनाल के कोहाड गाँव (तहसील- घरोंदा) निवासी श्री सतीश शर्मा की तीसरी सन्तान ५ वर्षीय, प्रथम कक्षा का विद्यार्थी कौटिल्य अपनी प्रतिभा से सबको चमत्कृत किए हुए है। प्रतीत होता है कि जैसे उसे सब कुछ आता है। राजनीतिक, भौगोलिक, अर्थशास्त्रीय प्रश्नों के उत्तर ऐसे देता है कि उधर प्रश्न समाप्त नहीं हुआ इधर उत्तर प्रस्तुत है। हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा ने १० लाख रु. का पारितोषिक प्रदान किया है।

विजयादशमी पर्व सोत्साह मनाया गया

आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर में विजयादशमी पर्व सोत्साह मनाया गया। सत्संग से पूर्व पं. रामदयाल, पं. इन्द्र प्रकाश यादव के पौरोहित्य में पर्व विशेष यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने रामायण कालीन राजनीतिक परिस्थितियों को रेखांकित करते हुए, राक्षसराज रावण के साम्राज्यवादी तथा आर्य संस्कृति-विध्वंसक क्रियाकलापों का समूल नष्ट करने हेतु, विशुद्ध आर्य संस्कृति के स्थापनार्थ 'निशिचर हीन करूँ मही, भुज उठाय प्रण कीन्ह' के अनुसरण में श्री राम के सबल उद्योग का विस्तृत वर्णन किया। इस अवसर पर श्री इन्द्रदेव पीयूष ने सुन्दर गीत प्रस्तुत किया। डॉ. अमृतलाल तापड़िया एवं प्रधान श्री भंवरलाल आर्य ने सबका स्वागत तथा श्रीमती शारदा गुप्ता ने आभार प्रकाशित किया। कार्यक्रम का सफल संचालन कवि भूपेन्द्र शर्मा ने किया। - रामदयाल मेहरा (प्रचार मंत्री)

प्रतिस्वर

Adarniy Ashok ji, Namaste.
Thanks for sending the Satyarath Saurabh regulary. It is indeed commendable.
Please keep up the great work that you have undertaken. We do compliment you for your devotion, dedication towards AryaSamaj.

With Regards
Amar Erry, Canada

सत्यार्थ सौरभ मासिक का सितम्बर २०१३ का अंक मिला। आकर्षकता की चरम सीमा का अंक है। आचार्य आर्य नरेश का लेख 'हिन्दू का जनेऊ प्राकृतिक चिकित्सक है', सत्य व प्रेरणादायी है। आचार्य जी अभी मॉरिशस में प्रचार यात्रा करके गये हैं।

सोनालाल नेमधारी, मॉरीशस

मेरे एक मित्र के सौजन्य से 'सत्यार्थ सौरभ' का जुलाई अंक पढ़ने को मिला है। पढ़कर आनन्द की अनुभूति हुई। सम्पूर्ण सामग्री बड़ी सारगर्भित एवं संग्रहणीय है। चिन्तन मनन करने योग्य है। 'धर्म एक वैज्ञानिक विश्लेषण' विशेष रूप से उल्लिखित है। विद्वान् लेखक वेदाचार्य डॉ. रघुवीर जी वेदालंकार ने धर्म की बड़ी व्यावहारिक व युगानुकूल व्याख्या की है। इसे भारतीय समाज यदि आत्मसात करले तो भारतीय समाज का स्वरूप बदल सकता है। इतिहास को एक नई दिशा मिल सकती है। - राधेश्याम धूत, जयपुर

अर्जुनदेव चड्ढा 'आर्यसेवाश्री' उपाधि से अलंकृत

आर्यसमाज रावतभाटा के ४७ वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर १३ अक्टूबर २०१३ को आर्यसमाज रावतभाटा तथा विभिन्न संस्थाओं के संयुक्त तत्वावधान में जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, कोटा के प्रधान श्री अर्जुनदेव चड्ढा को 'आर्य सेवाश्री सम्मान' से सम्मानित किया गया। नागरिक सम्मान समारोह के इस अवसर पर आर्यसमाज के वैदिक विद्वान् विष्णु मित्र शास्त्री, भजनोपदेशक संजीव आर्य, वैदिक विद्वान् अग्निमित्र शास्त्री, आर्य विद्वान् रामप्रसाद याज्ञिक, आर्य लेखक ओमप्रकाश आर्य, नरदेव आर्य तथा अनेक संस्थाओं के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

पुस्तक समीक्षा

"पाणिनीयशब्दानुशासनम्"

(संकलयिता प्रयोगदीपिकावृत्तिप्रवर्त्तयिता सम्पादकः - आचार्य सत्यानन्दवेद वागीश)

व्याकरण के सूर्य गुरुवर विरजानन्द जी की प्रबल कामना थी कि 'अष्टाध्यायी आदि व्याकरण के आर्ष ग्रन्थों के अध्यापन में विद्यार्थियों को दिए जाने वाले उदाहरण वेदों से एवं वैदिक ग्रन्थों से ही दिए जाये।' महाभाष्यकार भगवत्पाद पतजंलि जी ने भी व्याकरण का मुख्य उद्देश्य बताया :- **"रक्षार्थ वेदानामध्येयं व्याकरणम्।"** वेदों की रक्षा के लिए व्याकरण का अध्ययन करना चाहिए। किन्तु अनेक रूढ़ियों को तोड़कर क्रान्तिकारी परिवर्तनों के सूत्रधार अनेक स्वनाम-धन्य आर्य विद्वज्जनों का इस ओर विशेष ध्यानाकर्षण नहीं हुआ। इधर बहुश्रुत व्याकरणादि शास्त्रों में निष्णात् तपोनिष्ठ आचार्य सत्यानन्द वेदवागीश जी गुरुवर विरजानन्द जी की उक्त आर्ष कामना को पूर्ण करने के लिए कृत संकल्प होकर इस ऐतिहासिक रचना में संलग्न हुए। प्रस्तुत समीक्ष्य ग्रन्थरत्न उनकी तपस्या एवं संकल्प का सुफल है। प्रस्तुत ग्रन्थरत्न में आचार्य पाणिनि मुनि के पंचोपदेशों में से उणादिपाठ, लिंगानुशासन और गणपाठ की प्रयोगदीपिकावृत्ति दी गई है। इस 'पाणिनीय शब्दानुशासनम्' 'प्रयोग-दीपिका-वृति' शृंखला का यह तृतीय व अन्तिम ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में पूज्य आचार्य जी ने ६२५८ प्रयोग दिए हैं। इनमें से २७०८ प्रयोग आचार्य जी ने चारों वेदों से संकलित करके उद्धृत किए हैं। पूर्व रचित दो ग्रन्थों में दिए गए प्रयोगों की संख्या भी यदि सम्मिलित की जाये तो लगभग साढ़े दस हजार वेद-उद्धरण संग्रहित किए गए। इस प्रकार यह रचना आधुनिक काल में एकल व्यक्ति से की गई रचनाओं में एक विशेष स्थान रखती है। पाणिनीय पंचपाठी के द्वारा वेद में गति चाहने वाले व्याकरण के विद्यार्थी, अध्यापक एवं जिज्ञासुओं के लिए यह ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी एवं इस विद्या का अद्वितीय है। वर्तमान में विशेष आदर-सम्मान को प्राप्त न होने पर भी भविष्य के गंभीर अध्येताओं के मध्य आचार्य श्री की यह रचना विशेष आदर को प्राप्त होगी।

आचार्य हरिप्रसाद व्याकरणाचार्य, दिल्ली

प्रभु की विचित्र सृष्टि

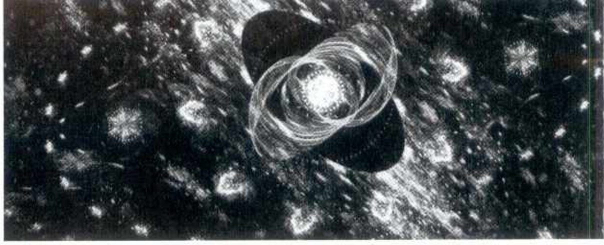

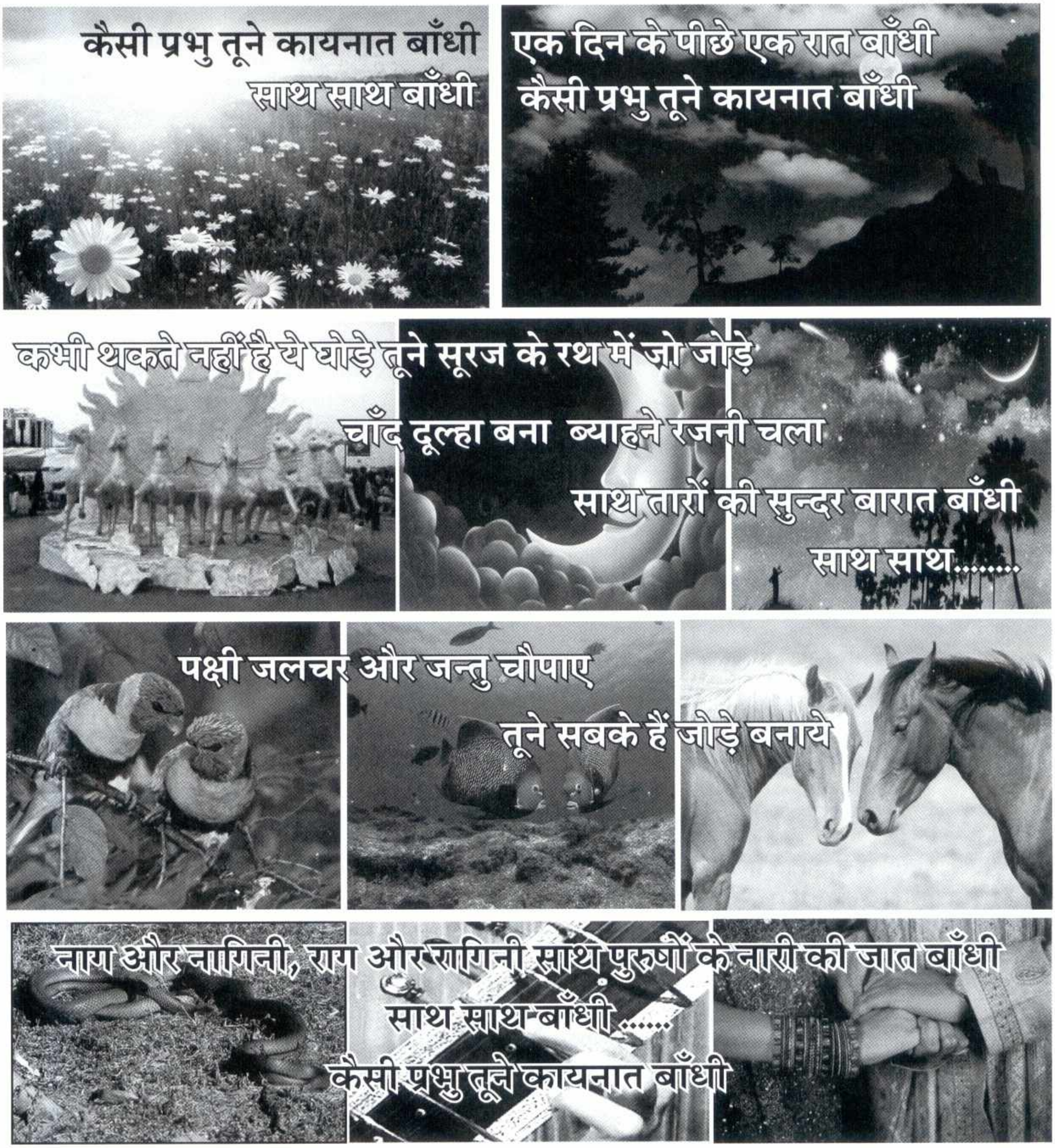

ऐसी महान्, विविध, नियमों में आबद्ध रचनाएँ, क्या बिना किसी सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान सत्ता के सम्भव हैं? कदापि नहीं।

मैं भारत की बेटी हूँ।

संस्कारों की नींव जमाती, हर पल आगे बढ़ती जाती।
वेद ऋचाओं में भी मैं हूँ, आज गगन में पैर जमाती।।
नहीं किसी से हेठी हूँ, मैं भारत की बेटी हूँ।
मात-पिता की सेवा करती, सास-ससुर के मन भाती।।
नन्हें नन्हें कोमल मन पर, ममता का संसार लुटाती।
ज्ञान दीप की ज्योति हूँ, मैं भारत की बेटी हूँ।।
धरती, अम्बर और अनल तक, विजय ध्वज मैंने फहराया।
लक्ष्मी,सरस्वती और पार्वती, देवी जैसा मान भी पाया।।
ममता की अनुभूति हूँ, मैं भारत की बेटी हूँ।
सीता जैसी पतिव्रता हूँ, वेदों की निर्झर वाणी।।
जब जब संकट पड़ा देश पर, लक्ष्मी हूँ झांसी की रानी।
अंग्रेजों की काल कटी हूँ, मैं भारत की बेटी हूँ।।
इंदिरा जैसी सत्ता शीर्ष पर, कल्पना सी पहचान बनी हूँ।
साहित्य में महादेवी हूँ, हर घर की मैं रानी हूँ।।
शिक्षा के दीप जलाती हूँ, मैं भारत की बेटी हूँ।

डॉ. अ. कीर्तिवर्धन - ८२६५८२१८००

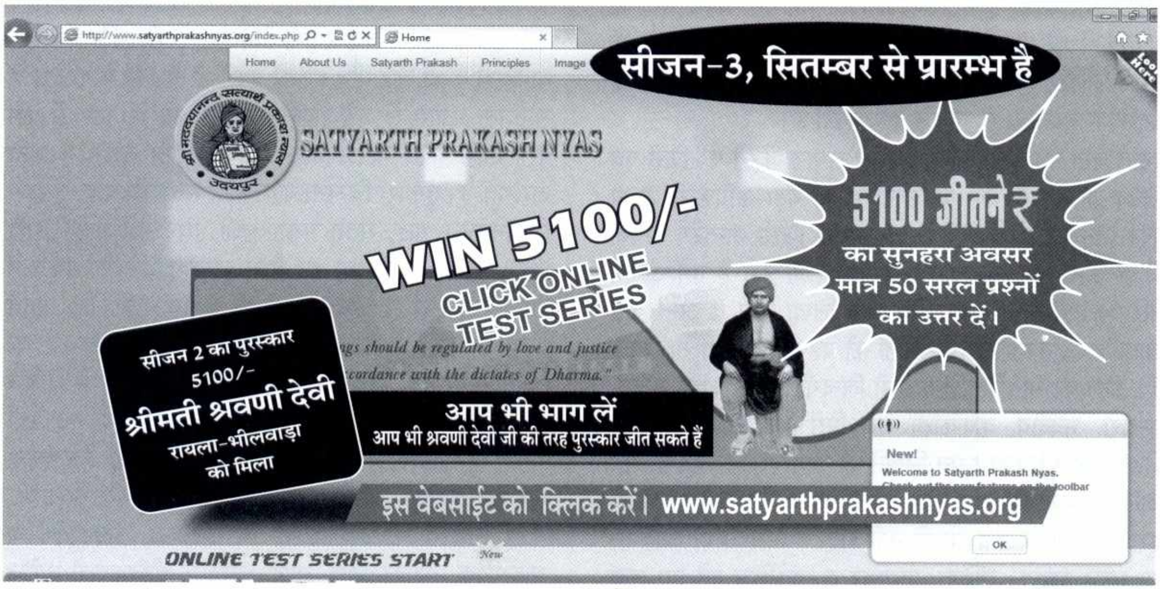

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹ ११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष,श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी.एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रहलादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ.वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए.

www.thearyasamaj.org

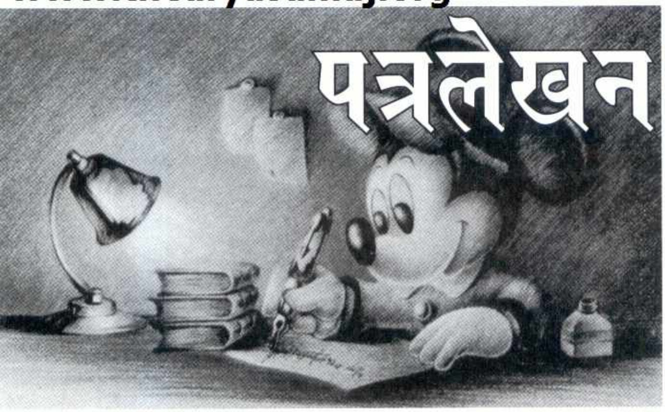

पत्रलेखन की विधा पर संकट

– हरिकृष्ण निगम

जब से सेलफोन पर बात करने का चलन अथवा कम्प्यूटर से ईमेल के जरिए संदेश भेजना आज की दिनचर्या का अभिन्न अंग बन चुका है, हमारी भाषा और अभिव्यक्ति का रूप ही बदल चुका है। वर्तनी के संक्षिप्त रूप, संकेत अक्षर, तरह तरह के संक्षेपाक्षर, 'हिंगलिश' 'इण्डिश' या 'स्विच-स्वैप' कहलाने वाली खिचड़ी भाषा ने सामान्य व्यक्ति की बातें चाहे वह कितना ही पढ़ा लिखा होने का दावा करे एक खास बोली में बदल दिया है। पत्रलेखन की कला का आज पूरी तरह पतन हो चुका है।

एक समय वह था जब पत्राचार सामाजिक संपर्क का अनिवार्य हिस्सा था जिसमें चाहे किसी का लिखित भाषा पर अधिकार हो या न हो, व्याकरण में लापरवाही हो पर वह अपने मन की भावनाओं को पत्र में उतार ही देता था। किसी भी परिवार के पुराने सँजोए हुए पत्रों में आज भी लोग उन भावनाओं को आश्चर्यजनक रूप से जीवन्त देख सकते हैं।

दूसरी बात यह है कि आज पत्र को समाप्त करने पर जिसे पत्र लिखा जा रहा है चाहे वह छोटा हो या बड़ा अधिकारी हो या कोई अनजाना, औपचारिक पत्र हो या किसी अन्तरंग अथवा किसी अन्य को आदर भाव से लिखा जा रहा है हमें अपना मस्तिष्क कुरेदना पड़ता है कि क्या लिखा जाए व अन्त कैसे किया जाए। पत्र लिखने में बहुतों को यह एक चुनौती सा लगता है। आज की भागदौड़, तनावभरी जिन्दगी में हम सिर्फ आपका, तुम्हारा, भवदीय, कृपाकांक्षी जैसे घिसे-पिटे, अनगिनत बार दोहराए शब्द लिखकर पत्र लिखने का काम पूरा कर देते हैं। पत्र लिखना आज जैसे एक बोझ बनता जा रहा है। ई-मेल में तो पूरा शब्द भी लिखना जरूरी नहीं होता है और न ही व्याकरण का ध्यान रखना- संक्षिप्त आद्याक्षर व सांकेतिक गढ़े हुए शब्द ही काफी होते हैं। सच देखा जाए तो पत्र लिखने की विधा ही समाप्त हो चुकी है। हम स्वयं महसूस करते हैं कि हमारे पत्रों में कुछ शब्दावली खासकर इतनी घिसी-पिटी हुई है जैसे वह लिखने पढ़ने वाले दोनों के लिए बोझ हो चुकी है। अनगिनत पत्रों का प्रारम्भिक वाक्य मात्र यही होता है- आशा है आप स्वस्थ, सानन्द होंगे। कुछ शब्द तो इतने पुराने पड़ गए हैं कि खुद लिखने वाला उससे चिढ़ने लगता है। आपका कृपापात्र, शुभेच्छु, तुम्हारा ही, आपका ही, विनीत जैसे अनेक शब्द अपने अन्तर्निहित अर्थों में पूरी तरह चुक गए हैं। फिर भी वे पत्रों को समाप्त करते समय उपयोग में लाए जाते हैं। पत्रलेखन की विधा ही नहीं, सभी तरह के साहित्य के प्रति समाज में पनपते उपेक्षापूर्ण रवैये का कारण शायद कम्प्यूटर, इन्टरनेट व सूचना प्रौद्योगिकी का बढ़ता वर्चस्व ही है।

एक समय वह भी था जब पत्रलेखन के प्रति बेरुखी तो दूर वे प्रासंगिकता के साथ-साथ प्रेरणा स्रोत भी बन जाते थे। पिछली पीढ़ी के साहित्यकारों, कवियों, समाज सुधारकों व राजनेताओं के पत्रों में पाने वाले के लिए, विषय के अलावा सम्बोधन या अन्तिम कुछ शब्द इतनी सहृदयता या पारदर्शिता से ओतप्रोत होते थे कि वे दिल छू लेते थे। कुछ महापुरुषों के पत्रों को पढ़ने पर उनके व्यक्तित्व के अनेक पहलुओं का दर्शन होता है। जिस तरह से वे किसी को सम्बोधित करते थे या अन्तिम कुछ शब्दों से उसे पूरा करते थे उसमें उनकी अपनी छाप होती थी। वे मानवीय संवेदना जगाते थे।

ऐसे कुछ उदाहरण चाहे स्वामी विवेकानन्द की कृतियों में देखें या हिन्दी के ही चार पाँच दशकों पहले के लेखकों में या देश के स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े राजनेताओं के पत्रों में। कम से कम वैसी अभिव्यक्ति या अपनापन आज के पत्र लेखन में पाना असंभव है। तुम्हारा चिरस्नेहबद्ध, सदा सत्यपाशाबद्ध, तुम्हारा चिरस्नेहबद्ध भाई, सतत् मंगलाकांक्षी, चिरआशीर्वादक आदि शब्द, लेखक की भावना का जैसा रसास्वादन करा सकते हैं वह अन्यत्र कहाँ हो सकता है। शायद वे सब भली भाँति जानते थे कि वे किसी भी ऊँचाई पर क्यों न रहे हों पर अहंकार का लेशमात्र भी नहीं झलकना चाहिए तभी तो वे अंत में लिखते थे- भगवत् पदाश्रित, सदैव भगवदाश्रित, तुम्हारा एकनिष्ठ भाई, विनीत, शुभाकांक्षी, तुम्हारा चिरभ्रातृप्रेमाबद्ध, आपकी चिरसंतान, स्नेहाधीन, हितेच्छु, आपका अपना, आपका शुभैषी, चिरस्नेहास्पद, सतत् स्नेहपरायण, आशीर्वादक, चिरसत्याबद्ध, आज्ञापूर्वक या आदरपूर्वक, आपका आदि-आदि। आज के भौतिकवादी व्यक्ति को ये शब्द अखर सकते हैं पर पिछली पीढ़ी के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के पत्रों की यह शब्दावली वस्तुतः व्यक्ति और समाज को जीवन्त बनाए रखने में कितनी सार्थक थी, यह समझने की बात है। यदि शब्द नहीं पर क्या इस भावना को पत्र लेखन में क्या फिर उतारा नहीं जा सकता है?

ए-१००२ पंचशील हाईट्स,
महावीर नगर, कान्दिवली (प.)
मुम्बई-४०००६७

www.thearyasamaj.org

बाल दिवस पर विशेष

खो रहा है बचपन

आकांक्षा यादव

पं० नेहरू से मिलने एक व्यक्ति आये। बातचीत के दौरान उन्होंने पूछा-''पंडित जी आप ७० साल के हो गये हैं लेकिन फिर भी हमेशा गुलाब की तरह तरोताजा दिखते हैं। जबकि मैं उम्र में आपसे छोटा होते हुए भी बूढ़ा दिखता हूँ।'' इस पर हँसते हुए नेहरू जी ने कहा-''इसके पीछे तीन कारण हैं।'' उस व्यक्ति ने आश्चर्यमिश्रित उत्सुकता से पूछा, वह क्या? नेहरू जी बोले-''पहला कारण तो यह है कि मैं बच्चों को बहुत प्यार करता हूँ। उनके साथ खेलने की कोशिश करता हूँ, जिससे मुझे लगता है कि मैं भी उनके जैसा हूँ। दूसरा कि मैं प्रकृति प्रेमी हूँ और पेड़-पौधों, पक्षी, पहाड़, नदी, झरना, चाँद, सितारे सभी से मेरा एक अटूट रिश्ता है। मैं इनके साथ जीता हूँ और ये मुझे तरोताजा रखते हैं।'' नेहरू जी ने तीसरा कारण दुनियादारी और उसमें अपने नजरिये को बताया-''दरअसल अधिकतर लोग सदैव छोटी-छोटी बातों में उलझे रहते हैं और उसी के बारे में सोचकर अपना दिमाग खराब कर लेते हैं। पर इन सबसे मेरा नजरिया बिल्कुल अलग है और छोटी-छोटी बातों का मुझ पर कोई असर नहीं पड़ता।'' इसके बाद नेहरू जी खुलकर बच्चों की तरह हँस पड़े। यहाँ बचपन की महत्ता को दर्शाती किसी गीतकार द्वारा लिखी गई पंक्तियाँ याद आती हैं -

ये दौलत भी ले लो, ये शोहरत भी ले लो
भले छीन लो मुझसे मेरी जवानी
मगर मुझको लौटा दो बचपन का सावन
वो कागज की कश्ती वो बारिश का पानी।

बचपन एक ऐसी अवस्था होती है, जहाँ जाति-धर्म-क्षेत्र कोई मायने नहीं रखते। बच्चे ही राष्ट्र की आत्मा हैं और इन्हीं पर अतीत को सहेज कर रखने की जिम्मेदारी भी है। बच्चों में ही राष्ट्र का वर्तमान रुख करवटें लेता है तो इन्हीं में भविष्य के अदृश्य बीज बोकर राष्ट्र को पल्लवित-पुष्पित किया जा सकता है। दुर्भाग्यवश अपने देश में इन्हीं बच्चों के शोषण की घटनाएँ नित्य-प्रतिदिन की बात हो गयी हैं और इसे हम नंगी आँखों से देखते हुए भी झुठलाना चाहते हैं- फिर चाहे वह निठारी कांड हो, स्कूलों में अध्यापकों द्वारा बच्चों को मारना-पीटना हो, बच्चियों का यौन शोषण हो या अनुसूचित जाति व जनजाति से जुड़े बच्चों का स्कूल में जातिगत शोषण हो। हाल ही में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की ओर से नई दिल्ली में आयोजित प्रतियोगिता के दौरान कई बच्चों ने बच्चों को पकड़ने वाले दैत्य, बच्चे खाने वाली चुड़ैल और बच्चे चुराने वाली औरत इत्यादि को अपने कार्टून एवं पेन्टिंग्स का आधार बनाया। यह दर्शाता है कि बच्चों के मनोमस्तिष्क पर किस प्रकार उनके साथ हुये दुर्व्यवहार दर्ज हैं, और उन्हें भय में खौफनाक यादों के साथ जीने को मजबूर कर रहे हैं।

यहाँ सवाल सिर्फ बाहरी व्यक्तियों द्वारा बच्चों के शोषण का नहीं है बल्कि घरेलू रिश्तेदारों द्वारा भी बच्चों का खुलेआम शोषण किया जाता है। हाल ही में केन्द्र सरकार की ओर से बाल शोषण पर कराये गये प्रथम राष्ट्रीय अध्ययन पर गौर करें तो ५३.२२ प्रतिशत बच्चों को एक या उससे ज्यादा बार यौन शोषण का शिकार होना पड़ा, जिनमें ५३ प्रतिशत लड़के और ४७ प्रतिशत लड़कियाँ हैं। २२ प्रतिशत बच्चों ने अपने साथ गम्भीर किस्म और ५१ प्रतिशत ने दूसरे तरह के यौन शोषण की बात स्वीकारी तो ६ प्रतिशत को जबरदस्ती यौनाचार के लिये मारा-पीटा भी गया। सबसे आश्चर्यजनक पहलू यह रहा कि यौन शोषण करने वालों में ५० प्रतिशत नजदीकी रिश्तेदार या मित्र थे। शारीरिक शोषण के अलावा मानसिक व उपेक्षापूर्ण शोषण के तथ्य भी अध्ययन के दौरान उभरकर आये। हर दूसरे बच्चे ने मानसिक शोषण की बात स्वीकारी, जहाँ ८३ प्रतिशत जिम्मेदार माँ-बाप ही होते हैं। निश्चिततः यह स्थिति भयावह

www.thearyasamaj.org

है। एक सभ्य समाज में बच्चों के साथ इस प्रकार की स्थिति को उचित नहीं ठहराया जा सकता।

बालश्रम की बात करें तो आधिकारिक आँकड़ों के मुताबिक भारत में फिलहाल **लगभग ५ करोड़ बाल श्रमिक हैं।** अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन ने भी भारत में सर्वाधिक बाल श्रमिक होने पर चिन्ता व्यक्त की है। ऐसे बच्चे कहीं बाल-वेश्यावृत्ति में झोंके गये हैं या खतरनाक उद्योगों या सड़क के किनारे किसी ढाबे में जूठे बर्तन धो रहे होते हैं या धार्मिक स्थलों व चौराहों पर भीख माँगते नजर आते हैं अथवा साहब लोगों के घरों में दासता का जीवन जी रहे होते हैं। सरकार ने सरकारी अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा बच्चों को घरेलू बाल मजदूर के रूप में काम पर लगाने के विरुद्ध एक निषेधाज्ञा भी जारी की पर दुर्भाग्य से सरकारी अधिकारी, कर्मचारी, नेतागण व बुद्धिजीवी समाज के लोग ही इन कानूनों का मखौल उड़ा रहे हैं। अकेले वर्ष २००६ में देश भर में करीब २६ लाख बच्चे घरों या अन्य व्यावसायिक केन्द्रों में बतौर नौकर काम कर रहे थे। गौरतलब है कि अधिकतर स्वयंसेवी संस्थायें या पुलिस खतरनाक उद्योगों में कार्य कर रहे बच्चों को मुक्त तो करा लेती हैं पर उसके बाद उनकी जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ लेती हैं। नतीजतन, ऐसे बच्चे किसी रोजगार या उचित पुनर्वास के अभाव में पुनः उसी दलदल में या अपराधियों की शरण में जाने को मजबूर होते हैं।

ऐसा नहीं है कि बच्चों के लिये संविधान में विशिष्ट उपबन्ध नहीं हैं। संविधान के अनुच्छेद १५(३) में बालकों के लिये विशेष उपबन्ध करने हेतु सरकार को शक्तियाँ प्रदत्त की गयी हैं। अनुच्छेद २३ बालकों के दुर्व्यापार और बेगार तथा इसी प्रकार का अन्य बलात्श्रम को प्रतिषिद्ध करता है। इसके तहत सरकार का कर्त्तव्य केवल बन्धुआ मजदूरों को मुक्त कराना ही नहीं वरन् उनके पुनर्वास की उचित व्यवस्था भी करना है। अनुच्छेद २४ चौदह वर्ष से कम उम्र के बालकों के कारखानों या किसी परिसंकटमय नियोजन में लगाने का प्रतिषेध करता है। यही नहीं नीति निदेशक तत्वों में अनुच्छेद ३९ में स्पष्ट उल्लिखित है कि बालकों की सुकुमार अवस्था का दुरुपयोग न हो और आर्थिक आवश्यकता से विवश होकर उन्हें ऐसे रोजगारों में न जाना पड़े जो उनकी आयु या शक्ति के अनुकूल न हों। इसी प्रकार बालकों को स्वतंत्र और गरिमामय वातावरण में स्वस्थ विकास के अवसर और सुविधायें दी जायें और बालकों की शोषण से तथा नैतिक व आर्थिक परित्याग से रक्षा की जाय। संविधान का अनुच्छेद ४५ आरम्भिक शिशुत्व देखरेख तथा ६ वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिये शिक्षा हेतु उपबन्ध करता है। इसी प्रकार मूल कर्त्तव्यों में अनुच्छेद ५१(क) में ८६वें संशोधन द्वारा वर्ष २००२ में नया खंड (ट) अंतःस्थापित करते हुये कहा गया कि जो माता-पिता या संरक्षक हैं, ६ से १४ वर्ष के मध्य आयु के अपने बच्चों या, यथा - स्थिति अपने पाल्य को शिक्षा का अवसर प्रदान करें। संविधान के इन उपबन्धों एवं बच्चों के समग्र विकास को वांछित गति प्रदान करने के लिये १९८५ में मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन महिला और बाल विकास विभाग गठित किया गया। बच्चों के अधिकारों और समाज के प्रति उनके कर्त्तव्यों का उल्लेख करते हुए ९ फरवरी २००४ को 'राष्ट्रीय बाल घोषणा पत्र' को राजपत्र में अधिसूचित किया गया, जिसका उद्देश्य बच्चों को जीवन जीने, स्वास्थ्य देखभाल, पोषाहार, जीवन स्तर, शिक्षा और शोषण से मुक्ति के अधिकार सुनिश्चित कराना है। यह घोषणापत्र बच्चों के अधिकारों के बारे में अन्तर्राष्ट्रीय समझौते (१९८९) के अनुरूप है, जिस पर भारत ने भी हस्ताक्षर किये हैं। यही नहीं हर वर्ष १४ नवम्बर को नेहरू जयन्ती को बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा मुसीबत में फँसे बच्चों हेतु चाइल्ड हेल्प लाइन-१०९८ की शुरुआत की गई है। १८ वर्ष तक के जरूरतमन्द बच्चे या फिर उनके शुभ चिन्तक इस हेल्प लाइन पर फोन करके मुसीबत में फँसे बच्चों को तुरन्त मदद दिला सकते हैं। यह हेल्प लाइन उन बच्चों की भी मदद करती है जो बालश्रम के शिकार हैं। हाल ही में भारत सरकार द्वारा २३ फरवरी २००७ को 'बाल आयोग' का गठन भी किया गया है। बाल आयोग बनाने के पीछे बच्चों को आतंकवाद, साम्प्रदायिक दंगों, उत्पीड़न, घरेलू हिंसा अश्लील साहित्य व वेश्यावृत्ति, एड्स, हिंसा, अवैध व्यापार व प्राकृतिक विपदा से बचाने जैसे उद्देश्य निहित हैं। बाल आयोग, बाल अधिकारों से जुड़े किसी भी मामले की जाँच कर सकता है और ऐसे मामलों में उचित कार्यवाही करने हेतु राज्य सरकार या पुलिस को निर्देश दे सकता है। इतने संवैधानिक उपबन्धों, नियमों-कानूनों, संधियों और आयोगों के बावजूद यदि बच्चों के अधिकारों का हनन हो रहा है, तो कहीं न कहीं इसके लिये समाज भी दोषी है। कोई भी कानून स्थिति सुधारने का दावा नहीं कर सकता, वह मात्र एक राह दिखाता है। जरूरत है कि बच्चों को पूरा पारिवारिक-सामाजिक-नैतिक समर्थन दिया जाये, ताकि वे राष्ट्र की नींव मजबूत बनाने में अपना योगदान कर सकें।

कई देशों में तो बच्चों के लिए अलग से लोकपाल नियुक्त हैं। सर्वप्रथम नार्वे ने १९८१ में बाल अधिकारों की रक्षा के लिए

www

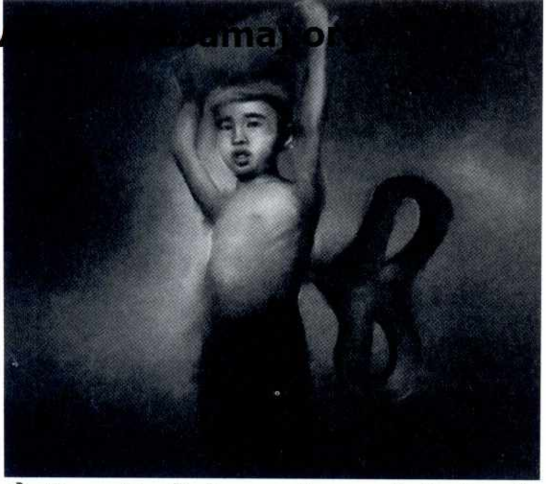

संवैधानिक अधिकारों से युक्त लोकपाल की नियुक्ति की। कालान्तर में आस्ट्रेलिया, कोस्टारिका, स्वीडन १९९३, स्पेन (१९९६), फिनलैण्ड इत्यादि देशों ने भी बच्चों के लिए लोकपाल की नियुक्ति की। लोकपाल का कर्तव्य है कि बाल अधिकार आयोग के अनुसार बच्चों के अधिकारों को बढ़ावा देना तथा उनके हितों का समर्थन करना। यही नहीं निजी और सार्वजनिक प्राधिकारियों में बाल अधिकारों के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करना भी उनके दायित्वों में है। कुछ देशों में तो लोकपाल सार्वजनिक विमर्श में भाग लेकर जनता की अभिरुचि बाल अधिकारों के प्रति बढ़ाते हैं एवं जनता व नीति निर्धारकों के रवैये को प्रभावित करते हैं। यही नहीं वे बच्चों और युवाओं के साथ निरन्तर सम्वाद कायम रखते हैं, ताकि उनके दृष्टिकोण और विचारों को समझा जा सके। बच्चों के प्रति बढ़ते दुर्व्यवहार एवं बालश्रम की समस्याओं के मद्देनजर भारत में भी बच्चों के लिए स्वतंत्र लोकपाल व्यवस्था गठित करने की माँग की जा रही है।

आज जरूरत है कि बालश्रम और बाल उत्पीड़न की स्थिति से राष्ट्र को उबारा जाये। ये बच्चे भले ही आज वोट बैंक नहीं हैं पर आने वाले कल के नेतृत्वकर्ता हैं। उन अभिभावकों को जो कि तात्कालिक लालच में आकर अपने बच्चों को बालश्रम में झोंक देते हैं, भी इस सम्बन्ध में समझदारी का निर्वाह करना पड़ेगा कि बच्चों को शिक्षारूपी उनके मूलाधिकार से वंचित नहीं किया जाना चाहिये। गैर सरकारी संगठनों और सरकारी मशीनरी को भी मात्र कागजी खानापूर्ति या मीडिया की निगाह में आने के लिये अपने दायित्वों का निर्वहन नहीं करना चाहिये वल्कि उनका उद्देश्य इनकी वास्तविक स्वतन्त्रता सुनिश्चित करना होना चाहिये। आज यह सोचने की जरूरत है कि जिन बच्चों पर देश के भविष्य की नींव टिकी हुई है, उनकी नींव खुद ही कमजोर हो तो वे भला राष्ट्र का बोझ क्या उठायेंगे। अतः बाल अधिकारों के प्रति सजगता एक सुखी और समृद्ध राष्ट्र की प्रथम आवश्यकता है।

टाइप-५ निदेशक बंगला
जी.पी.ओ. कैम्पस
सिविल लाइन्स, इलाहाबाद-२११००१ (उ.प्र.)

दीपावली

कवि अब्दुल जब्बार

तारे उतरे आज अवध में
रोशन रात निराली है।
विजय पर्व के इस प्रकाश का नाम दिवाली है।।
बाँध के गठरी चला अँधेरा चुपके से इस बार।
आज अमावस पर तारों की देखा भाली है।।
फूलों ने फिर खिलना सीखा कलियों ने मुस्कान।
बरसों बाद जो वन से लौटा बाग का माली है।।
ज्योति कलश छलके मन भावन वन्दनवार सजे।
खुशियाँ खेले घर आँगन चंचल मतवाली है।।
आशा ने विश्वास को पूजा मन भावन के साथ।
यश वैभव सुख शान की घड़ियाँ आने वाली हैं।।
सदियाँ बीती पर ना बीता ये प्रकाश का पल।
राम-राज की रौनक फिर से छाने वाली है।।
सूरज ने दी दुआ दीप को जिए तू सारी रात।
लड़ते रहना अँधियारे से तू बलशाली है।।
दया धरम के नाम ना निकला, जिस घर से धन धान।
समझलो लक्ष्मी उस घर से अब जाने वाली है।।
तारों को दे विदा प्रभाती गाकर मंगल गीत।
आराम करो सूरज की किरणें आने वाली हैं।।

नूर निकेतन, कुम्भानगर बाजार
चित्तौड़गढ़ (राज.) ३१२००१
०९४१४१०९१८१, ०१४७२-२४०६७७

श्री बी. एल. अग्रवाल
संरक्षक न्यास

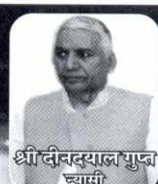

श्री दीनदयाल गुप्त
न्यासी

सत्यार्थ प्रकाश न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ
परिवार की ओर से प्रिय
पाठकों को दीपावली
के पावन पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

बाल वाटिका

एक हीरा व्यापारी था जो हीरे का बहुत बड़ा विशेषज्ञ माना जाता था, किन्तु गंभीर बीमारी के चलते अल्प आयु में ही उसकी मृत्यु हो गयी। अपने पीछे वह अपनी पत्नी और बेटा छोड़ गया। जब बेटा बड़ा हुआ तो उसकी माँ ने कहा –

'बेटा, मरने से पहले तुम्हारे पिताजी ये पत्थर छोड़ गए थे, तुम इसे लेकर बाजार जाओ और इसकी कीमत का पता लगाओ, ध्यान रहे कि तुम्हें केवल कीमत पता करनी है, इसे बेचना नहीं है।' युवक पत्थर लेकर निकला, सबसे पहले उसे एक सब्जी बेचने वाली महिला मिली। 'अम्मा, तुम इस पत्थर के बदले मुझे क्या दे सकती हो ?' युवक ने पूछा– 'देना ही है तो दो गाजरों के बदले मुझे ये दे दो, तौलने के काम आएगा।' सब्जी वाली बोली।

युवक आगे बढ़ गया। इस बार वो एक दुकानदार के पास गया और उससे पत्थर की कीमत जानना चाही।

दुकानदार बोला – 'इसके बदले मैं अधिक से अधिक ५०० रुपये दे सकता हूँ। देना हो तो दो नहीं तो आगे बढ़ जाओ।' युवक इस बार एक सुनार के पास गया, सुनार ने पत्थर के बदले २० हजार देने की बात की, फिर वह हीरे की एक प्रतिष्ठित दुकान पर गया वहाँ उसे पत्थर के बदले १ लाख रुपये का प्रस्ताव मिला। और अंत में युवक शहर के सबसे बड़े हीरा विशेषज्ञ के पास पहुँचा और बोला, 'श्रीमान्! कृपया इस पत्थर की कीमत बताने का कष्ट करें।' विशेषज्ञ ने ध्यान से पत्थर का निरीक्षण किया और आश्चर्य से युवक की तरफ देखते हुए बोला– 'यह तो एक अमूल्य हीरा है, करोड़ों रुपये देकर भी ऐसा हीरा मिलना मुश्किल है।' मित्रों, यदि हम गहराई से सोचें तो ऐसा ही मूल्यवान हमारा मानव जीवन भी है। यह अलग बात है कि हममें से बहुत से लोग इसकी कीमत नहीं जानते और सब्जी बेचने वाली महिला की तरह इसे मामूली समझ तुच्छ कामों में लगा देते हैं। आइये हम प्रार्थना करें कि ईश्वर हमें इस मूल्यवान जीवन को समझने की सद्बुद्धि दे और हम हीरे के विशेषज्ञ की तरह इस जीवन का मूल्य आँक सकें?

प्रस्तुति– श्री प्रेम नारायण जायसवाल, उदयपुर

www.thearyasam

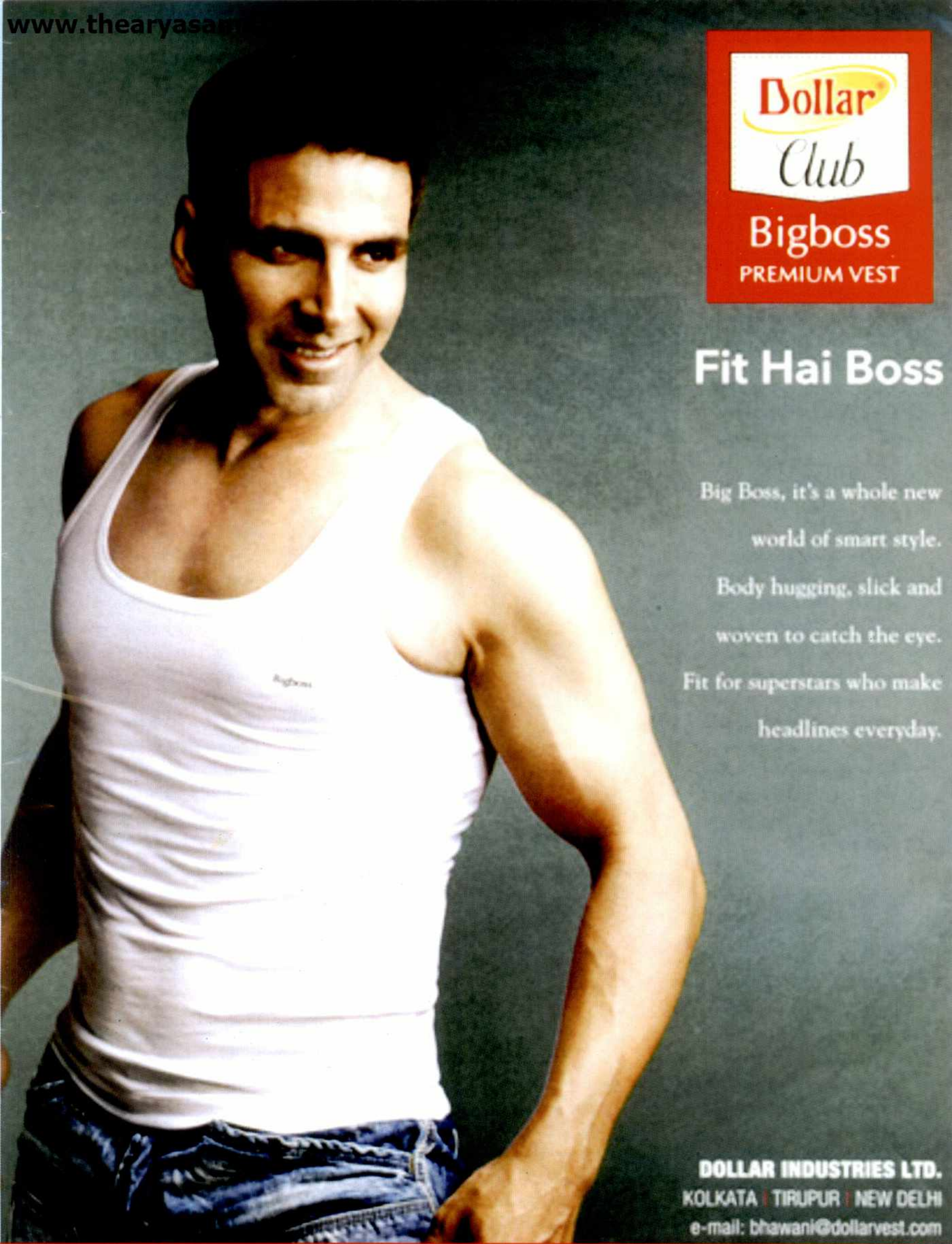

www.thearyasamaj.org

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 November-2013 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2013-2015

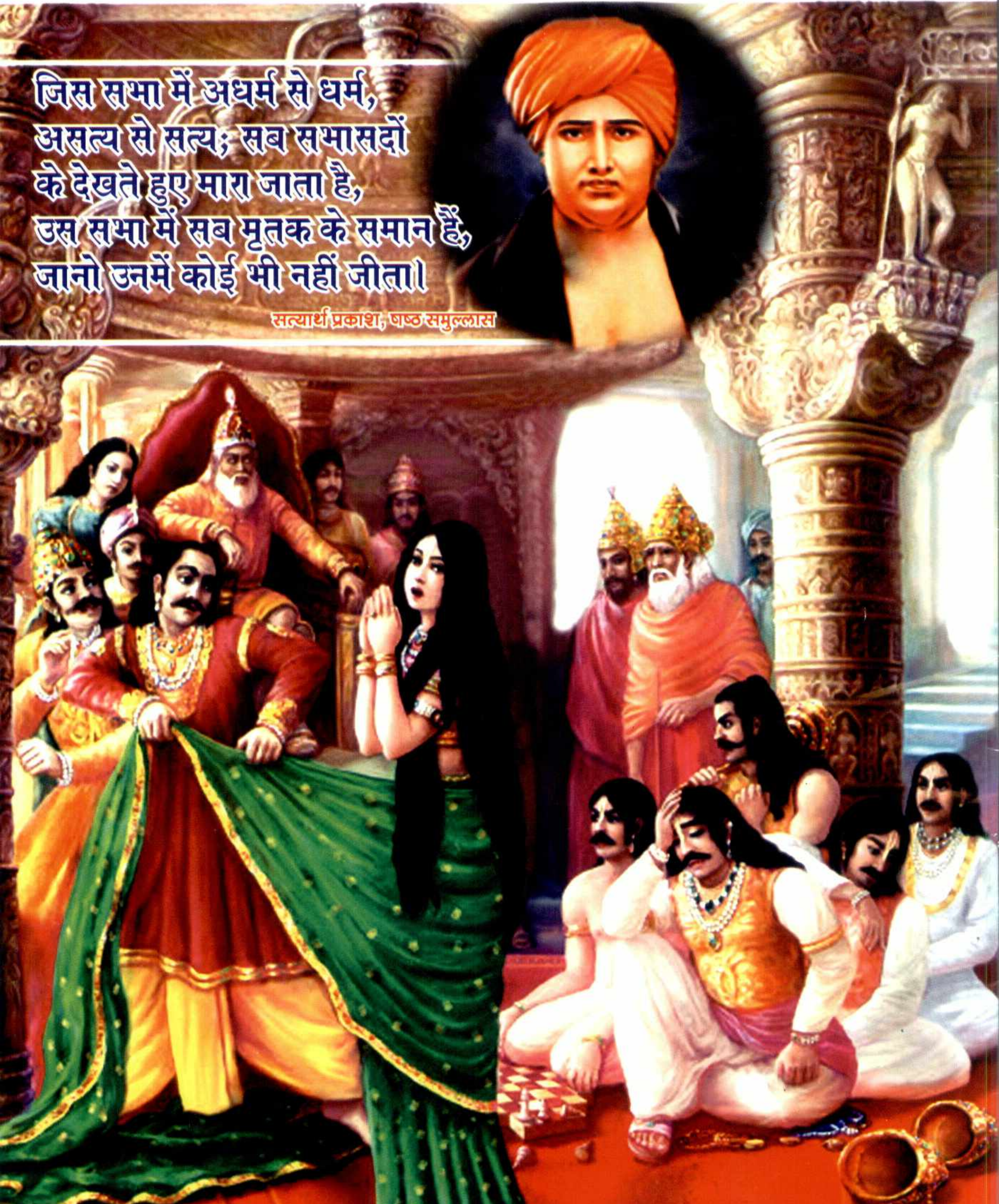

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

COPL/11831